हँसती दुनिया

★ वर्ष 45 ★ अंक 6 ★ जून 2018

हँसती दुनिया

● वर्ष 45 ● अंक 6 ● जून 2018 ● पृष्ठ 52

बच्चों के बौद्धिक विकास की अनूठी पत्रिका

(पंजाबी, अंग्रेजी व मराठी में भी प्रकाशित)

सी. एल. गुलाटी, प्रभारी पत्रिका विभाग

मुख्य सम्पादक : हरजीत निषाद

सम्पादक **विमलेश आहूजा**

सहायक सम्पादक **सुभाष चन्द्र**

Ph.: 011-47660200
Fax: 01127608215
Email: editorial@nirankari.org
Website: http//www.nirankari.org

प्रकाशक एवं मुद्रक राधेश्याम ने सन्त निरंकारी मण्डल, दिल्ली–9 हेतु एम.पी. प्रिंटर्स बी–220 फेस–II, नोएडा–201 305 (उ.प्र.) से मुद्रित करवाकर सन्त निरंकारी सत्संग भवन, सन्त निरंकारी कालोनी, दिल्ली–09 से प्रकाशित किया।

Subscription Value

/ ia

	India/ Nepal	UK	Europe	USA	Canada Austral
Annual	Rs.150	£15	€ 20	$25	$30
5 Years	Rs.700	£70	€ 95	$120	$140

Other Countries :
Equivalent to U·S· Dollars as mentioned above.

स्तम्भ

4. सबसे पहले
5. सम्पूर्ण अवतार बाणी
8. समाचार
20. क्या आप जानते हैं?
44. पढ़ो और हँसो
46. कभी न भूलो
49. रंग भरो
50. आपके पत्र

चित्रकथाएं

12. दादा जी
34. किट्टी

विशेष/लेख

6. सद्गुरु माता सविन्दर हरदेव जी के दिव्य वचन
10. मृगमरीचिका क्या है?
: पुष्पेश कुमार
18. रोबोट बने अफसर
: किरण बाला
27. बादली सेंदुआ
: डॉ. परशुराम शुक्ल
30. विज्ञान प्रश्नोत्तरी
: घमण्डीलाल अग्रवाल
38. गर्मियों में तरावट पहुँचाएगी : ककड़ी
: मीना
40. सबसे बड़ा हेलीकॉप्टर, रेडियो टेलीस्कोप,
: किरण बाला

कहानियां

9. कला पारखी कौन?
: विभा वर्मा
17. पप्पू की समझदारी
: किशोर डैनियल
19. घमण्ड का नतीजा
: विभा वर्मा
22. ऐसे शुरू हुआ अमराईयों का चलन
: दीपांशु जैन
23. पिता की सीख
: परशुराम संबल
32. करोगे सेवा तो पाओगे मेवा
: मेघा जैन
41. चोरी का दण्ड
: दीपांशु जैन

कविताएं

11. पेड़ लगाओ
: उमेश चन्द्र सिरसवारी
16. समय, घड़ी
: कीर्ति श्रीवास्तव
21. पेड़ बचाएं, पानी को सहेजें
: राजकुमार जैन 'राजन'
31. चुनमुन चिड़िया आती है
: हरजीत निषाद
39. पानी, हवा
: डॉ. घमण्डीलाल अग्रवाल
47. सूरज और धरती, प्यारी धरती
: कमलसिंह चौहान

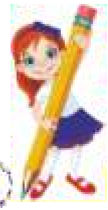

वास्तविक आत्म-सन्तुष्टि

शिक्षक ने कक्षा में प्रवेश करने के बाद सभी का अभिवादन स्वीकार किया और कहा– आज मैं आप सभी से पूछना चाहता हूँ कि आप पढ़-लिखकर जीवन में क्या बनना चाहते हैं?

सभी विद्यार्थी आपस में बातचीत करने लगे और एक-दूसरे से पूछने लगे कि तुम क्या बनना चाहते हो? सभी विद्यार्थी आश्चर्यचकित थे कि आज अचानक हमारे शिक्षक जी ने एक ऐसा प्रश्न क्यों कर दिया जिसके बारे में हम अक्सर सोचते ही रहते हैं परन्तु किसी निर्णय पर नहीं पहुँच पाते।

शिक्षक ने पुनः सभी से बारी-बारी पूछना आरम्भ किया कि आप जिन्दगी में क्या बनना चाहते हैं? अनेक उत्तर आए। किसी ने कहा– मैं सरकारी अधिकारी बनना चाहता हूँ। किसी किसी ने कहा कि वे डॉक्टर, इंजीनियर, एडवोकेट अथवा शिक्षक बनना चाहते हैं।

अब शिक्षक की बारी आई और कहा– आप सभी कुछ न कुछ अवश्य ही बनना चाहते हैं। यह बहुत अच्छी बात है। मान लीजिए आप बड़े होकर जो-जो भी जिसने चाहा वह बन जाता है तो आप क्या करोगे?

लगभग सभी का एक-सा उत्तर आया- हम पैसा कमाएंगे, परिवार का पालन-पोषण करेंगे, आराम की जिन्दगी जिएंगे।

विद्यार्थियों का उत्तर सुनकर शिक्षक महोदय गम्भीर और चुप हो गए। कुछ विद्यार्थी यह सोचने लगे कि हमने गलत तो कुछ कहा नहीं फिर भी हमारे शिक्षक महोदय इस तरह मौन क्यों हो गए? परन्तु शिक्षक ने अपनी बात को प्रेमपूर्वक शिक्षा देने के लहज़े से कहा–

आप जीवन में जो भी कार्य करें पूरा मन लगाकर करें, पूरी सामर्थ्य और शक्ति से उस कार्य को करें। इस प्रकार करने से आप में आत्म-सन्तुष्टि का भाव आयेगा कि मैंने अपनी पूर्ण लगन से अमुक कार्य किया। यह अलग बात है कि हर कार्य की सफलता हमारे हाथ में नहीं होती। कभी-कभी परिणाम अपेक्षित भी नहीं होता। फिर भी सन्तुष्टि का भाव तो आता ही है जो आपको कभी भी सही रास्ते से भटकने नहीं देगा।

आप जीवन में कुछ भी बनें, वह हमारा होना नहीं होता। वह केवल सामाजिक दृष्टि से जीवनयापन का ढंग ही होता है। हम जीवन के हर मोड़ और परिस्थिति से कुछ न कुछ अवश्य सीख रहे होते हैं। यही भावना हमारे अन्तर्मन में रहनी चाहिए कि जीवन हमें क्या सिखाना चाह रहा है। इसलिए हम सभी को जीवनभर एक विद्यार्थी की तरह ही जीना चाहिए।

प्यारे साथियों! हमारा जीवन एक सुनहरा अवसर है। जीवन में साहस, संकल्प और परिश्रम से ही हर चुनौती का सामना करने की शक्ति आती है। जो इस शक्ति का प्रयोग करते हुए सफलता-असफलता के परिणाम से बंधनमुक्त हो जाता है, केवल वही जीवन के दर्शन को समझ पाता है।

सन्तुष्टियुक्त जीवन किसी भी सफलता से उत्तम है। सफलता का मापदण्ड दूसरों की नजर से होता है परन्तु सन्तुष्टि का मूल्यांकन हमारी आत्मा, मन और हृदय की आवाज से होता है। यही समझ असली समझ है।

यही समझ, यही ज्ञान, यही विद्या, हर स्थिति एवं परिस्थिति में अगर विद्यार्थी के जीवन में आ जाती है तो वही वास्तविक आत्म-सन्तुष्टि देती है।

– विमलेश आहूजा

हमारे पवित्र ग्रंथ : हरजीत निषाद

सम्पूर्ण अवतार बाणी

पद संख्या : 168

अपणा लाया प्यार न लग्गे रब लावे तां लगदा ए।
बुझया होया दीवा जेकर गुरु जगावे जगदा ए।
पूरे सत्गुरु बाझों कोई अज तक होया पार नहीं।
लख करे पई बाझ पती दे नारी दा शिंगार नहीं
सत पुरख नूं जाणे जेहड़ा सत्गुरु पूरा होन्दा ए।
जेहड़ा केवल मन्तर देवे गुरु अधूरा होन्दा ए।
ओस गुरु नूं की करना ए जो करदा दूर भुलेखे ना।
काहदा ज्ञानी जेहड़ा रब नूं अंग-संग अपणे वेखे ना।
पूरा सत्गुरु इक्को छिन विच लोको रब विखांदा ए।
वार वार अवतार गुरु तों वारे वारे जांदा ए।

भावार्थ : उपरोक्त पद में बाबा अवतार सिंह जी बता रहे हैं कि प्रभु से मिलकर ही प्रेम उत्पन्न होता है। मन में प्रभु-प्रेम की लगन अपने आप नहीं लगती, परमात्मा ही मानव मन में प्रेम की लगन लगाए तभी प्रेम होता है। परमात्मा के प्रति प्रेम का बुझा हुआ दीपक अपने आप प्रज्ज्वलित नहीं होता, गुरु जब कृपा करके इसे जलाता है तभी यह जलता है, तभी रोशनी देने में सक्षम होता है। जिस तरह बिना पति के भले ही कोई स्त्री लाख प्रयास करे फिर भी उसका शृंगार पूरा नहीं होता।

इसी तरह बिना पूर्ण सद्गुरु की कृपा के कोई भवसागर से पार नहीं हुआ। भवसागर यह संसार रूपी सागर है जिसमें दुःख-सुख, धूप-छांव, आनन्द-ग्लानि, राग-द्वेष सब कुछ है। इस भवसागर में संसार के लोग बिना गुरु के सहारे डूबते-तैरते रहते हैं। सद्गुरु की कृपा हो जाए तभी मानव भवसागर को सहजता से पार करने में सफल होता है।

बाबा अवतार सिंह जी पूरे सद्गुरु की विशेषता बताते हुए कह रहे हैं कि लोगों के मनों में गुरु के विषय में संशय बना रहता है। हर किसी को उसे इस संशय से मुक्त होने का प्रयास करना चाहिए। यह अवश्य जानना चाहिए कि जो गुरु केवल मंत्र देता है वह अधूरा होता है। जो सत्य स्वरूप परमपिता इस हरि अविनाशी परमात्मा को जानता है वही पूरा सद्गुरु होता है। वास्तविकता में भवसागर से पार होने के लिए पूरे गुरु की शरण में जाना अत्यन्त आवश्यक होता है। जो गुरु स्वयं अज्ञानता में है, जिसे स्वयं प्रभु की जानकारी नहीं है वह दूसरों को परमात्मा का बोध नहीं करवा सकता। उस गुरु की क्या उपयोगिता हो सकती है जो मन के भ्रमों को दूर न कर सके और वह ज्ञानी भी कैसा ज्ञानी जो अंग-संग मौजूद इस हरि अविनाशी प्रभु-परमात्मा के दर्शन न करता हो।

बाबा अवतार सिंह जी स्पष्ट कर रहे हैं कि दुनिया के लोगों इस बात को अच्छी तरह जान लो कि पूरा सद्गुरु पलभर भी विलम्ब नहीं करता और एक क्षण में ही परमात्मा के दर्शन करा देता है। प्रभु के दर्शन कराकर सद्गुरु ने जो उपकार किया है ऐसे सद्गुरु पर मैं वारी वारी जाऊँ।

सद्‌गुरु माता सविन्दर हरदेव जी के दिव्य वचन

★ निःस्वार्थ भाव से की जाने वाली सेवा ही श्रेष्ठ है।

★ हम संवरे तो दुनिया अपने आप संवर जायेगी।

★ परस्पर सहयोग की भावना से कार्य किया जाये तो हर कार्य आसान हो जाता है।

★ संसार में मिलवर्तन की कमी है। आवश्यकता है सब मिल-जुलकर रहें।

★ हमें अपने-आप पर ही अपना ध्यान केन्द्रित रखना है। कोई क्या कर रहा है? क्या नहीं कर रहा? उसकी तरफ ध्यान ना दें। हम गुरमत की मर्यादा में रहते हुए अपना जीवन जी पा रहे हैं कि नहीं, सिर्फ इस पर ध्यान दें।

★ सन्त के कर्म ही उसके जीवन की पहचान होते हैं क्योंकि वे जानते हैं कि सिर्फ यह कह देना ही काफी नहीं है कि हमें अहंकार से दूर रहना चाहिए, निंदा, नफरत नहीं करनी चाहिए। जब तक इनको हम अमल में नहीं लाते, यह सिर्फ खोखले शब्द ही रह जाते हैं।

★ मैं को निकालकर केवल निरंकार को ही हृदय में बसायें।

★ एक प्रभु से जुड़कर ही 'सारा संसार-एक परिवार' का भाव साकार होगा।

★ सकारात्मक सोच से ही जीवन खुशहाल हो सकता है।

★ उतार-चढ़ाव सब की जिन्दगी में आते हैं परन्तु जो सन्त-महापुरुष होते हैं वे अपनी भक्ति को कमजोर नहीं होने देते। हमेशा इस निरंकार को पहल देते हैं। जिस पेड़ की जड़ें मजबूत होती हैं वो कभी किसी तूफान से डरता नहीं है।

★ कल्याणकारी शिक्षाओं को पहले हम अपने जीवन में अपनायें और फिर दूसरों तक वो बातें पहुँचायें। हमारी कथनी और करनी एक-सी होने पर दूसरे पर प्रभाव तो पड़ेगा ही परन्तु हमारे अपने जीवन में भी गुरमत वाले गुण आयेंगे और हम अपने जीवन को खूबसूरत, सुन्दर और आनन्दमय बना पायेंगे।

★ जब तक हम इस निरंकार का आधार नहीं लेते, हम कभी एक गुरमुख या गुरमत वाला जीवन नहीं जी पाते।

★ अगर हम अपनी मनमर्जी के साथ जीते हैं तो कुछ ना कुछ, कहीं ना कहीं हम अपना भी और औरों का भी नुकसान करते हैं।

★ सन्त अपने अहं भाव को त्याग कर, अहंकार को पीछे छोड़कर सिर्फ सेवा, सुमिरण, सत्संग से जुड़ा होता है और उसकी हमेशा यही कोशिश होती है कि मैं दूसरों को भी सेवा, सुमिरण और सत्संग के साथ जोड़कर रखूं।

★ परमात्मा में ऐसे विश्वास करो, जैसे आप सूर्य पर करते हो, इसलिए नहीं कि आप सूर्य को देख पाते हैं बल्कि इसलिए कि सूर्य के कारण ही आप बाकी सब कुछ देख सकते हैं।

★ महापुरुषों का जीवन प्रेरणा देने वाला ही होता है, नेकी के रास्ते पर, अच्छाई के रास्ते पर, प्यार वाले रास्ते पर चलने की वे दूसरों को भी प्रेरणा देते हैं और उनका अपना जीवन भी वैसा होता है।

* सन्तों-महापुरुषों के अन्दर हमेशा समर्पण भाव ही होता है। यह समर्पण का भाव भी तभी आता है जब भक्त निरंकार का आधार लेता है। उन्हें विश्वास होता है कि जो निरंकार कर रहा है, वह बेहतरी के लिये ही कर रहा है।

* भक्त का जीवन अन्दर-बाहर से एक जैसा होना चाहिए जिसे देखकर सब प्रभावित हों और उससे मिलने के इच्छुक हों। अन्दर-बाहर से एक सन्त वाला जीवन जीकर दुनिया की चकाचौंध में नहीं आना और न ही किसी की बात का असर लेना है।

* सन्त-महात्मा हमेशा मरहम लगाने वाले ही होते हैं, आग बुझाने वाले ही होते हैं, रोते हुए के आंसू पोंछने वाले होते हैं।

* हम खुद सकारात्मक रहेंगे तो दूसरों को भी सकारात्मक रहने की शिक्षा दे पायेंगे और असली मायने में वही भक्ति होती है जो हमें इतना विशाल कर देती है कि हमारे अन्दर किसी के प्रति कोई नकारात्मक भावनाएं रहती ही नहीं।

* हम अगर दूसरों की हर वक्त निंदा ही करते रहेंगे तो हम खुद को कब सुधारेंगे, अपने आपको सुधारने का हमें कब समय मिलेगा?

* भक्त कभी भी सेवा का अभिमान नहीं करते और अपने को कर्ता भी नहीं मानते क्योंकि वे जानते हैं कि यह निरंकार जो सेवा हमसे करवा रहा है। यही कर्ता है और करने वाला भी यही है।

* जब हर पल इस निरंकार-प्रभु का एहसास रहेगा तो हमारा जिंदगी जीने का दृष्टिकोण बदल जाएगा और हम दूसरों में उनके नकारात्मक भाव या अवगुण देखने के बदले निरंकार के दर्शन करेंगे।

* जो भी सन्त इस बेरंगे के रंग के साथ जुड़ता है तो वह पूरी कोशिश करता है कि जैसे हमारा जीवन खुशहाल हुआ है, हम औरों को भी इस रंग के साथ जोड़कर उनका जीवन खुशहाल कर पाएं।

* सबसे उत्तम भक्ति वह होती है जो दुनियावी इच्छाओं से ऊपर उठकर समर्पित भाव से की जाती है। भक्त ज्ञान लेने के बाद कण-कण में निरंकार को महसूस करते हैं, इसके अन्दर ही वास करते हैं।

* सिर्फ ज्ञान लेना ही काफी नहीं, ज्ञान के साथ कर्म भी आवश्यक है। भक्त, पारिवारिक और सामाजिक उत्तरदायित्वों का निर्वाह करते हुए भक्ति करता है।

* अगर आज का नौजवान अपनी ऊर्जा और बुजुर्गों का तजुर्बा लेकर आगे बढ़े तो इस दुनिया में शांति, प्रेम और समृद्धि आ सकती है।

* साधु-संतों ने तो हमेशा प्रीत, प्यार, नम्रता, भाईचारे और इन्सानियत का सबक ही सिखाया है।

– संकलन: श्रीराम प्रजाप्रति (दिल्ली)

कॉमनवेल्थ गेम्स में भारत का तीसरा सर्वश्रेष्ठ प्रदर्शन

26 गोल्ड के साथ 66 मेडल जीते

गोल्ड कोस्ट (ऑस्ट्रेलिया)। 21वें कॉमनवेल्थ गेम्स में भारत ने 26 गोल्ड के साथ 66 मेडल जीते। कॉमनवेल्थ के 88 साल के इतिहास में ये भारत का तीसरा सर्वश्रेष्ठ प्रदर्शन रहा। इससे बेहतर प्रदर्शन सिर्फ 2010 और 2002 में रहा था। गोल्ड कोस्ट में हुए गेम्स के आखिरी दिन भारत ने 1 गोल्ड सहित 7 मेडल जीते। बैडमिंटन महिला सिंगल्स फाइनल में साइना नेहवाल ने गोल्ड जीता। किदांबी श्रीकांत को बैडमिंटन पुरुष सिंगल्स में सिल्वर मिला। बैडमिंटन डबल्स में चिराग-सात्विक को और स्क्वॉश डबल्स में दीपिका-जोशना को सिल्वर मिला।

पहली बार भारत ने बैडमिंटन में 6 मेडल जीते। दिल्ली कॉमनवेल्थ में 4 मेडल जीते थे।

साइना नेहवाल बैडमिंटन में 3 गोल्ड जीतने वाली पहली भारतीय खिलाड़ी बनीं। इस बार 2 गोल्ड जीते। 2010 में एक गोल्ड जीता था। भारत के 500 मेडल पूरे हुए। भारत कॉमनवेल्थ में 500 मेडल जीतने वाला पांचवां देश बन गया है। कॉमनवेल्थ गेम्स में भारत के कुल पदकों की संख्या 504 हो गई है। 500 से अधिक मेडल जीतने वाले देश ऑस्ट्रेलिया, इंग्लैंड, कनाडा और न्यूजीलैंड हैं।

सद्‌गुरु माता सविन्दर हरदेव जी की छत्रछाया में उ.प्र. के वाराणसी में दो दिवसीय प्रादेशिक निरंकारी सन्त-समागम (आध्यात्मिक सम्मेलन) का आयोजन हुआ।

समागम के दूसरे दिन गुरुवंदना समारोह में हँसती दुनिया के परिवार के सदस्यों ने सांस्कृतिक एवं आध्यात्मिक कार्यक्रमों द्वारा गुरुवंदना की।

कला पारखी कौन?

राजा कृष्णदेव राय को संगीत से बड़ा प्रेम था। एक बार उन्होंने बनारस से किसी प्रसिद्ध गवैये को बुलाया। रात गये तक दरबार में उससे राग सुनते रहे। दरबारी ऊब रहे थे, ऊंघ रहे थे फिर भी राजा को प्रसन्न करने के लिए वाह! वाह! कह रहे थे। अचानक राजा की निगाह तेनालीराम पर पड़ी। वह एक कोने में चुपचाप बैठा था, वह झपकी ले रहा था। देखते ही राजा नाराज हो गये। गायन समाप्त हो गया। राजा ने तेनालीराम को याद किया। वह सोया हुआ था। सिपाही उसे पकड़कर राजा के नजदीक लाये।

राजा बोले– तेनालीराम, तुमने अतिथि गवैये के साथ हमारा भी अपमान किया है। आदेश के विपरीत तुम दरबारी महफिल में सारे समय सोते रहे। तुम्हें कठोर दंड मिलना चाहिए। तुम हमारा राज्य छोड़कर तुरन्त चले जाओ।

दरबारी खुश हो गये। तेनालीराम सकपका गया। फिर बोला– महाराज, आपका आदेश सिर-माथे पर। माँ बचपन में लोरियां सुनाती थी। उनको सुनकर सुध-बुध खो बैठता था। आज का गायन सुनकर मुझे वैसा ही लगा जैसे मैं मीठी लोरियां सुन रहा हूँ। मुझे कुछ भी होश न रहा।

राजा ने गवैये की ओर देखा। गवैया मुस्कुराकर बोला– यही सबसे बड़ा कला पारखी है महाराज। इसे क्षमा किया जाना चाहिए। राजा ने तेनालीराम को क्षमा कर दिया साथ में ईनाम भी दिया।

–वास्तविकता यही है कि जो लोग दिमाग से जाग्रत रहते हैं, वे निर्भीक भी रहते हैं तथा अपने ऊपर आये संकट का निवारण भी वे तुरन्त कर देते हैं। इतना ही नहीं वे अपनी मस्तिष्क ऊर्जा से भरे हुए ओत-प्रोत रहते हैं।

जानकारी : पुष्पेश कुमार

मृगमरीचिका क्या है?

बच्चों, आप सभी मृगमरीचिका के नाम से अवश्य परिचित होंगे। लेकिन क्या आप जानते हैं कि मृगमरीचिका क्या है? और हमें क्यों दिखायी पड़ती है? इसका नाम मृगमरीचिका क्यों पड़ा? गर्मी के मौसम में आप अपने गाँव या शहर की पक्की सड़क पर देखा होगा कि आपसे कुछ दूर पानी से भरा एक तालाब है। आप जैसे-जैसे उस तालाब की ओर बढ़ते हैं, वैसे-वैसे वह तालाब भी आपसे दूर होता जा रहा है। यह मृगमरीचिका (मृगतृष्णा) है। पानी से भरा तालाब हमें इसलिए दिखायी पड़ता है कि प्रकाश जो आमतौर पर सीधा आता है, उस समय सीधा न आकर, एक दर्पण से परिवर्तित होकर आता है। आपको यह जानकर आश्चर्य हो रहा होगा कि अब यह दर्पण कहाँ से आ गया? दरअसल, यह कांच का दर्पण नहीं होता बल्कि यह हवा का दर्पण होता है। होता यह है कि सड़क से लगी हवा की परत जब एक खास ताप पर गर्म होती है और उसके ठीक ऊपर वाली परत एकदम ठंडी होती है तो यह दर्पण बनता है। आकाश से आने वाला प्रकाश जब नीचे आता है तो वह इस ठंडी परत से गुजरता हुआ, गर्म परत से टकराकर वापस मुड़ता है और तब हमारी आँखों तक पहुँचता है। इस प्रकार आकाश ही परिवर्तित होकर दिखायी पड़ता है, जो कि एकदम पानी से भरा तालाब लगता है।

मृगमरीचिका कई प्रकार की होती है। जब हवा का दर्पण उल्टी तरह से बनता है, यानी ठंडी परत नीचे और गर्म परत ऊपर तो यह काम भी उल्टी तरह से करता है। ऐसी स्थिति में आप अपने से मीलों दूर मकान या पानी के जहाज भी देख सकते हैं। वास्तव में इसका नाम मृग के साथ इसीलिए जोड़ दिया गया है कि रेगिस्तान में दौड़ता प्यासा मृग पानी की खोज में परिवर्तित आकाश को ही पानी समझकर उसके पीछे दौड़ता है लेकिन यह 'पानी' आगे ही आगे बढ़ता जाता है। इस प्रकार मृग की प्यास कभी बुझ नहीं पाती है। यही कारण है कि इसे मृगमरीचिका कहा जाता है।

बाल कविता : उमेश चन्द्र सिरसवारी

5 जून, पर्यावरण दिवस पर विशेष

पेड़ लगाओ

पेड़ लगाओ, पेड़ लगाओ।
पर्यावरण को स्वच्छ बनाओ।।

पेड़ों को काटते जाओगे,
तो फल-फूल कहाँ से पाओगे।
हवा प्रदूषित हो जायेगी,
ताजी हवा कहाँ से लाओगे।।

धरती का जो विनाश हुआ है,
इसकी तुम भरपाई कराओ।
पेड़ लगाओ, पेड़ लगाओ,
पर्यावरण को स्वच्छ बनाओ।।

वृक्ष जीवन में लाते खुशियां,
ऑक्सीजन का भंडार हैं ये।
मानव के हैं जीवन-रक्षक,
पक्षियों के घर बार हैं ये।।

अमूल्य सम्पदा पेड़ धरा के,
औषधि के भंडार हैं ये।
बाढ़ भूस्खलन से हमें बचाते,
पेड़ लगा हरियाली लाओ।।

पेड़ लगाओ, पेड़ लगाओ।
पर्यावरण को स्वच्छ बनाओ।।

दादाजी

चित्रांकन एवं लेखन
अजय कालड़ा

माँ कितने सेब ले आऊँ?
तीन किलो।
ये ले पैसे और देखो सेब मीठे लाना, चखकर देख लेना।
₹100
हाँ माँ, चखकर ही लाऊँगा।
अब ये फल वाला कहाँ मिलेगा?

अरे वाह, वह रहा फल वाला!
फलवाले! सेब कैसे दिए हैं?
सौ रुपये किलो।
मुझे तीन किलो सेब दे दो। पर ये मीठे होने चाहिए।
एक दम मीठे हैं, मिश्री जैसे।
माँ ने कहा है, सेब चखकर लाना।
हाँ, लो चखकर देखो।

मैं हर सेब चखकर लूँगा, माँ ने कहा है।
हाँ, ठीक है।
ये सारे सेब खाए हुए हैं, ये तुम क्या उठा लाए?
माँ, आपने ही तो कहा था चखकर मीठे सेब लाने को।
शेखचिल्ली... तभी तो सब तुम्हे मूर्ख कहते हैं। थोड़ा तो समझदार बनो!
हाँ माँ, ये सारे सेब तो जूठे हो गए! मैं समझ गया। इन्हें फेंक देना चाहिए। हमें जूठे और खराब सेब नहीं खाना चाहिए। हमें सारे काम सोच समझकर करने चाहिए।

दो बाल कविताएं : कीर्ति श्रीवास्तव

समय

समय का तुम मोल जानो।
इसका भी महत्व पहचानो।
समय तुमको सिखलाता है।
अच्छा-बुरा सब बतलाता है।

समय पर जो करोगे काम।
कर पाओगे ऊँचा नाम।
समय की कद्र जो कर लोगे।
दुनिया मुट्ठी में भर लोगे।

समय न रूकेगा तुम्हारे लिए।
संग चलना होगा उसके लिए।
समय दिखाता जीवन-खेल।
कौन है पास और कौन है फेल।

घड़ी

टिक्-टिक्-टिक् चलती घड़ी,
आई स्कूल जाने की घड़ी।
बजा अलार्म जगा देती,
समय पर पहुँचाती घड़ी।

मिनिट-मिनिट का हिसाब रखे,
घंटे पर घंटा बजाती घड़ी।
हाथ पर हो या दीवार पर टंगी,
सही समय दिखाती घड़ी।

मंजिल पर पहुँचोगे तभी,
जब स्वयं बनोगे घड़ी।
डर को दिल से निकाल दो,
न देखो पल-पल घड़ी।

कहानी : किशोर डैनियल

पप्पू की समझदारी

रात काफी बीत चुकी थी। परन्तु पप्पू के मम्मी–डैडी अभी तक नहीं लौटे थे वे अपने बड़े बेटे को लेने गये हुए थे जो विदेश से पहली बार ही आ रहा था।

पप्पू अपने कमरे में बैठा था। बारह बजने को थे, डैडी–मम्मी और भैया अभी तक नहीं आए थे। तभी उसको खट्–खट् की आवाज सुनाई दी। वह सोचने लगा कि वे लोग आ गये हैं। परन्तु यह केवल उसका वहम् था।

थोड़ा समय ही बीता होगा कि वही खट्–खट् की आवाज़ फिर हुई। पप्पू आवाज़ को ध्यान से सुनने लगा। उसको लगा– कोई दीवार तोड़ रहा है। उसने चिल्लाना चाहा, पर वह कुछ सोचकर चुप रहा। थोड़ी देर बाद रोशनदान की एक ईंट अपने स्थान से निकल गई, उसके बाद दूसरी फिर तीसरी।

पप्पू अब समझ गया कि ईंट निकालने वाला कोई चोर है और उसका अनुमान उस समय ठीक ही निकला जब चोर ने अपनी एक टांग उस छेद में डाली। परन्तु यह देख पप्पू घबराया नहीं बल्कि उसने हिम्मत से काम लिया।

उसने मेज पर रखे हुए जंबूर को उठाया और चुपके से दीवार के निकट पहुँचकर उसने जंबूर से चोर के पैर को पकड़ लिया। चोर ने अपने को छुड़ाने का भरपूर प्रयत्न किया परन्तु पप्पू ने अपनी पूरी शक्ति से जम्बूर को दबा दिया था। अब पप्पू ने जोर–जोर से चिल्लाना भी शुरू कर दिया। चोर! चोर!! चोर!! उसकी आवाज को सुनकर आस–पास के लोग इकट्ठे हो गये और चोर को पकड़ लिया गया।

उधर पप्पू के मम्मी डैडी और भैया भी आ गये थे।

पप्पू के मम्मी–डैडी पप्पू की होशियारी देखकर खुशी से फूले नहीं समा रहे थे।

उन्होंने पुलिस को बुलाकर चोर को पुलिस के हवाले कर दिया। जिसकी पुलिस को कई दिनों से तलाश थी। क्योंकि वह पहले भी कई चोरियाँ कर चुका था। पर पुलिस उसे पकड़ नहीं पा रही थी। चोर को पकड़वाने पर पुलिस आयुक्त ने विशेषतौर पर पप्पू को सम्मानित किया।

रोबोट बने अफसर

जानकारी : किरणबाला

अफसर या अधिकारी तो आपने कई देखे होंगे जो अपनी कुर्सी पर धाक जमाए बैठे होते हैं लेकिन अब जब जमाना रोबोटिक टेक्नोलॉजी का है तो मानव का स्थान मशीनी मानव ले रहे हैं और उन्हें अफसर के रूप में नियुक्त किया जाने लगा है।

चीन ने तो बाकायदा इसकी शुरुआत कर दी है। उसने एक नया प्रयोग करते हुए गुआंगडोंग प्रांत के तीन बंदरगाहों पर 10 रोबोट सीमा शुल्क अधिकारी के रूप में तैनात किए हैं। इन रोबोट ने कस्टम ड्यूटी ऑफिसर के रूप में कार्य करना भी शुरू कर दिया है।

गोंगबेई, हेंगकिन और झोंगशान बंदरगाहों पर चीन के सीमा शुल्क अधिकारियों के रूप में इस्तेमाल किया जा रहा यह रोबोट पहला बैच है। शियाओ हाई नामा रोबोट स्टेट ऑफ द आर्ट प्रौद्योगिकी से लैस है और सुनने, बात करने, सीखने, देखने और चलने में सक्षम हैं।

एक विशेष सीमा शुल्क संबंधी डाटाबेस के आधार पर यह रोबोट कैंटोनीज, मंडारिन, अंग्रेजी और जापानी सहित 28 भाषाओं और बोलियों में सवालों के जवाब देने में सक्षम है। सीमा शुल्क अधिकारियों का कहना है कि वह रोबोट से भविष्य में अपने ग्राहक सेवा हॉटलाइन से जोड़ देंगे।

ये रोबोट संदिग्धों को पहचानने में भी सक्षम हैं। चेहरा पहचानने वाली तकनीक से युक्त ये रोबोट संदिग्ध लोगों का पता लगाकर अलार्म बजा सकते हैं।

बाल कहानी : विभा वर्मा

घमण्ड का नतीजा

सुन्दरवन में भीक्कू गीदड़ कई दिनों से भूखा और बीमार था। उसमें इतनी शक्ति भी नहीं थी कि अपनी भूख मिटाने के लिए शिकार कर सके। वह लाचार हो एक वृक्ष के नीचे पड़ा रहता।

एक दिन एक शेर भैंस का शिकार कर अपनी गुफा में जा रहा था। तभी उसकी नजर ललचायी आँखों से देखते हुए भीक्कू गीदड़ पर पड़ी। उसकी कमजोरी एवं असहाय अवस्था को देखकर शेर को दया आ गयी। वह उसे अपनी पीठ पर लादकर अपनी गुफा में ले गया और वहाँ पड़ा हुआ बासी मांस उसे खाने को दिया।

इसी तरह बैठे-बैठे ही थोड़ा-बहुत उसे प्रतिदिन कुछ न कुछ खाने को मिल जाता। कुछ ही हफ्तों में वह पहले जैसा मोटा-ताजा हो गया। धीरे-धीरे वह काफी बलवान भी हो गया और उसे अपनी ताकत पर घमण्ड भी होने लगा। अब अपने ही स्वजातीय बन्धुओं से वह अपने को श्रेष्ठ समझने लगा। वह भालू, बन्दर, लोमड़ी और खरगोश से टक्कर लेने में भी नहीं चूकता।

एक दिन भीक्कू गीदड़ ने कक्कू हाथी का ही शिकार करने की योजना बना ली। उसने अपने मन का विचार जब शेर को बताया तो शेर बोला– अरे भीक्कू गीदड़! कक्कू हाथी बहुत शक्तिशाली है। उसका शिकार तेरे बस की बात नहीं है। पर भीक्कू गीदड़ ने उसकी एक भी न सुनी।

कुछ दिनों बाद संयोग से कक्कू हाथी उधर से गुजर रहा था। बस फिर क्या था? भीक्कू गीदड़ दौड़कर एक चट्टान पर बैठ गया। वह मन ही मन योजना बनाने लगा कि जैसे ही कक्कू हाथी इधर से गुजरेगा वह उस पर धावा बोल देगा।

कुछ देर बाद जैसे ही कक्कू हाथी चट्टान के समीप आया भीक्कू गीदड़ ने उसकी गर्दन पर हमला कर दिया। लेकिन यह क्या? भीक्कू गीदड़ उसकी गर्दन के बजाए उसके पैरों में गिर पड़ा।

इस घटना से कक्कू हाथी बिल्कुल अनभिज्ञ था। हड़बड़ाहट में उसने अपना पैर भीक्कू गीदड़ पर रख दिया, जिससे उसका उसी समय कचूमर निकल गया। पास ही में कुछ दूर खड़ा शेर यह दृश्य देख रहा था। वह यह दृश्य देखकर ताली बजा-बजाकर कहने लगा– 'सच है घमण्डियों की यही दशा होती है।'

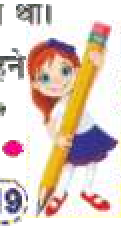

क्या आप जानते हैं?

- दक्षिण आस्ट्रेलिया में आयर्स रॉक नामक पहाड़ी प्रतिदिन अपना रंग बदलती है।
- दुनिया में सबसे छोटा नाम स्वीडन देश के शहर 'ए' का है।
- नेपाल एक ऐसा देश है जो कभी गुलाम नहीं हुआ।
- नील नदी का पानी गर्म होता है।
- साईबेरिया की बैकाल झील विश्व की सबसे गहरी झील है।
- घोंसला बनाने वाला एक मात्र सर्प – नागराज
- विश्व की सबसे जहरीली छिपकली – हिलोडर्मा
- सबसे जहरीला सांप – समुद्री सांप या हाइड्रोफिश
- सबसे लम्बा रेलमार्ग – ट्रान्स साइबेरियन रेलमार्ग (लेनिनग्राड से ब्लाडीवोस्टक तक)

संग्रहकर्ता : यशी हार्दिक सक्सेना (हरदोई)

सामान्य जानकारियां मानव शरीर के बारे में

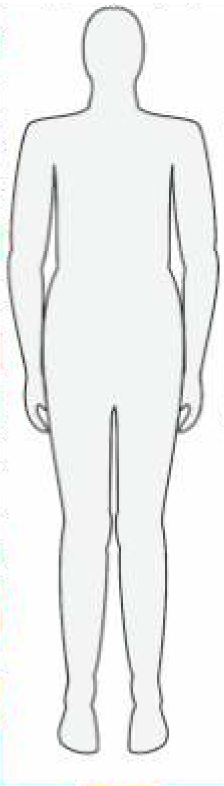

- मानव शरीर का कंकाल 206 हड्डियों का बना होता है।
- मानव के शरीर में लगभग 60 खरब कोशिकायें पायी जाती हैं।
- मानव के मस्तिष्क का वजन लगभग 3 पौंड होता है।
- मानव शरीर में सबसे छोटी हड्डी कान में होती है।
- मानव के पैरों में 30 हड्डियां होती हैं।
- हमारे रक्त का रंग हीमोग्लोबिन के कारण ही लाल होता है।
- मानव शरीर में मांसपेशियों की संख्या – 639
- मानव शरीर में सबसे लम्बी मांसपेशी – ग्लूटियस मैक्सीमस (कूल्हा)
- मांसपेशी एवं अस्थि के जोड़ को कहते हैं – टेण्डन
- अस्थि से अस्थि के जोड़ को कहते हैं – लिगामेंट्स

जो हर दिन हर पल बढ़ता है

- मनुष्य के नाखून 24 घंटों में 0047 इंच बढ़ते हैं।
- मनुष्य के सामान्यतया प्रतिदिन सिर एवं दाढ़ी के बाल लगभग 0,00432 सें.मी. बढ़ जाते हैं।
- मनुष्य के सामान्यतया प्रतिदिन अंगुली के नाखून 0,000117 सें.मी. बढ़ जाते हैं।

प्रस्तुति : विभा वर्मा

दो बाल कविताएं :
राजकुमार जैन 'राजन'

पेड़ बचाएं

सावन में पेड़ों की डालों,
पर पड़ते हैं झूले।
हरे-भरे बागों में बच्चे,
खेलें खुशी से फूले।।

इनकी शाखाओं पर करते,
पक्षी रैन बसेरा।
डालें पेड़ों की छाया में,
पंथी अपना डेरा।।

गर्मी तेज पड़े तो पौधे,
बादल पास बुलाते।
वर्षा को आकर्षित करते,
शीतल हवा बहाते।।

पेड़ हमारे जीवन रक्षक,
इनकी महिमा न्यारी।
पेड़ रहें धरती पर,
ये हम सबकी जिम्मेदारी।।

पानी को सहेजें

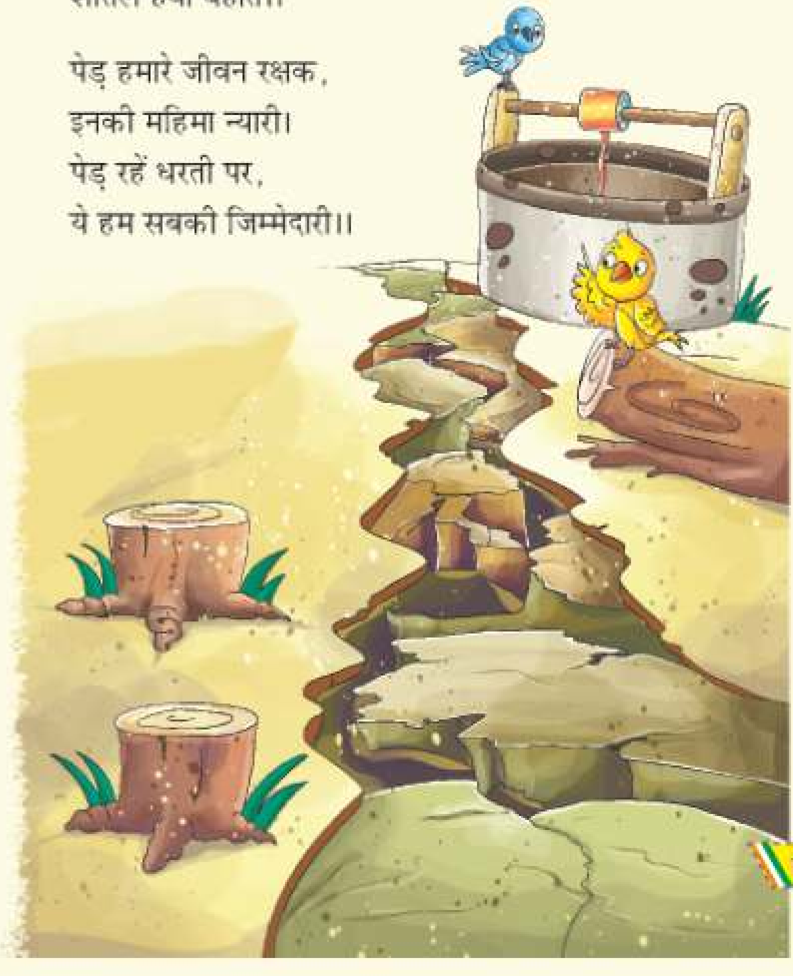

ताल-तलैया सूख गये हैं,
सूख गई हैं झीलें।
दरक गई उपजाऊ धरती,
हो गये पत्ते पीले।।

पानी अमृत जीवन का,
क्यों, करते हम नादानी।
कैसे बीतेगा भू का कल,
बचा नहीं यदि पानी।।

पर्यावरण बिगाड़ा हमने,
जंगल सारे काटे।
छीना दाना-पानी पंछी का,
दु:ख कितने बांटे।।

अभी समय है वर्षा के,
पानी को खूब सहेजें।
खेतों में लहराएं फसलें,
इतना ही जल भेजें।।

रोचक बाल कहानी : दीपांशु जैन

ऐसे शुरू हुआ अमराईयों का चलन

पुराने समय की बात है। आमनाथ नामक एक महासिद्ध थे। वे अपनी शिष्यमण्डली के साथ इधर-उधर घूमा करते थे। किसी एक जगह काफी समय तक ठहरते नहीं थे। भिक्षा मांगकर खाते और योगाभ्यास करते थे।

एक बार घूमते-घूमते वे सिरमौर राज्य के नाहन नगर में पहुँचे। स्नान-ध्यान के बाद उन्होंने अपने एक शिष्य को आदेश दिया कि वह राजा के यहाँ से भिक्षा मांग लाये। साथ ही शिष्य को उन्होंने विशेष रूप से यह भी समझाया कि वह भोजन सामग्री के साथ आम का अचार लाना न भूले।

राजमहल में पहुँचकर शिष्य ने आवाज लगाई। राजभण्डारी बाहर आया। साधु को दरवाजे पर आया देखकर उसने प्रणाम किया और उसके बाद उसने उसे पर्याप्त भोजन सामग्री प्रदान की। किन्तु शिष्य ने जब आम के अचार की मांग की तो राजभण्डारी ने अपनी असमर्थता प्रकट की।

दरअसल कुछ वर्षों से सिरमौर में आम की फसल अच्छी नहीं हो रही थी। सर्वत्र आम का अकाल पड़ गया था। कुछ धनी-मानी लोग ही आम का अचार डालने में समर्थ थे, क्योंकि दूर-दराज से महंगे आम मंगाने की हैसियत सिर्फ उन्हीं की थी।

आम के अचार को लेकर राजभण्डारी और शिष्य की बात अभी चल ही रही थी कि उधर से राजा आ निकले। जब उन्हें पता चला कि इन दिनों राजधानी में महासिद्ध आमनाथ जी अपने शिष्यों समेत ठहरे हुए हैं और भोजन के साथ आम का अचार चाहते हैं तो उन्होंने राजभण्डारी को संकेत दिया कि साधुओं की इच्छा पूरी कर दी जाये। शिष्य, भोजन सामग्री के साथ आम का अचार लेकर पहुँचा। गुरु आमनाथ जी बहुत खुश हुए। सबने मिलकर प्रेम से भोजन किया। उस दिन से आम का अचार भिक्षा का एक अनिवार्य अंग बन गया।

इसी तरह चार दिन बीत गये। पांचवे दिन शिष्य जब भिक्षा के लिए पहुँचा तो राजभण्डारी ने आम का अचार देने से मना कर दिया। शिष्य को यह अच्छा नहीं लगा। फिर भी वह विनम्र भाव से आम के अचार के लिए आग्रह करता रहा। राजभण्डारी ने इस बार भी मना कर दिया।

बात राजा के कानों तक पहुँची। राजा तत्काल वहाँ आ पहुँचे और शिष्य को धमकाते हुए बोले कि अपने गुरु से जाकर कहना कि रोज-रोज आम का अचार नहीं मिलेगा। आम का अचार यदि इतना ही अच्छा लगता है तो क्यों नहीं कहीं अमराई लगाकर बैठ जाते? निठल्ले घूमते रहने से क्या फायदा?

शिष्य को राजा की बात बुरी तो लगी, मगर उसने कुछ कहा नहीं और अपने डेरे पर लौट आया। भोजन के समय जब आम का अचार नहीं मिला तो गुरु ने शिष्य से इसका कारण पूछा। इस पर शिष्य ने राजा की नाराजगी साफ-साफ शब्दों में बता दी। सुनकर क्षणभर के लिए तो योगी आमनाथ जी भौचक्के रह गये। फिर वे यह सोचकर संतुष्ट हुए कि राजा ठीक ही कहते हैं। निठल्ले रहकर किसी इच्छा की पूर्ति नहीं की जा सकती।

गुरु ने उस दिन से यह नियम बना लिया कि अब वे किसी एक जगह अधिक समय तक ठहरेंगे तो नहीं, मगर जहाँ-जहाँ भी जायेंगे, वहाँ-वहाँ आम के अधिक से अधिक पेड़ जरूर लगायेंगे।

कहा जाता है कि भारत में अमराइयों का चलन तभी से चला आ रहा है।

कहानी : परशुराम संबल

पिता की सीख

बहुत पुरानी बात है। उस समय अयोध्या पर राजा चन्द्रसेन राज्य करते थे। चन्द्रसेन एक दयालु और न्यायप्रिय राजा तो थे ही साथ ही वह सत्य और अहिंसा के भी पुजारी थे। राज्य में सब सुखी और खुश रहें, किसी को कोई पीड़ा अथवा कष्ट न हो, इसी उद्देश्य के साथ वह शासन चलाते थे। परन्तु ऐसे बहुत से व्यक्ति होते हैं जो पड़ोसी की ख्याति देखकर उनसे डाह (ईर्ष्या) करते हैं। ऐसा ही उनके पड़ोसी राज्य का राजा काशी नरेश नारायण सिंह था। उसने अकारण ही अयोध्या पर हमला बोल दिया। राजा चन्द्रसेन ने ऐसा सोचा भी न था और न ही वे युद्ध करने के लिये तैयार थे। उन्होंने सोचा कि युद्ध में अकारण ही राज्य के हजारों निरपराध आदमी मारे जायेंगे। व्यर्थ का रक्तपात होगा। उन्होंने उसी रात राजधानी को छोड़ दिया, सन्यासी का वेश धारण किया और काशी आकर नगर के बाहर एक मन्दिर में रहने लगे। उनके साथ उनकी रानी भी साध्वी वेश में पति के साथ रहने लगी। उस समय रानी गर्भवती थी।

कुछ ही माह पश्चात् रानी की कोख से एक सुन्दर से पुत्र ने जन्म लिया। चन्द्रसेन ने पुत्र का नाम सूर्यसेन रखा। जब सूर्यसेन शिक्षा प्राप्त करने की उम्र में पहुँचा तो राजा ने गुरुकुल में शिक्षा प्राप्त करने के लिये भेज दिया।

एक दिन काशी नरेश को इस बात का पता चल गया कि अयोध्या नरेश चन्द्रसेन अयोध्या से पलायन करके अपनी रानी के साथ साधुवेश में उसी के

* शत्रुता, लड़ाई और हिंसा को केवल प्रेमरूपी शस्त्र से ही जीता जा सकता है।

अयोध्या नरेश को रानी के साथ फाँसी दे दी गई। माता-पिता के इस असामयिक विछोह से सूर्यसेन को बहुत भारी दु:ख पहुँचा। अब वह अकेला और बेसहारा रह गया था। उसने थोड़े से पैसों पर काशी नरेश के महावत के यहाँ नौकरी कर ली। काशी नरेश और महावत को इस बात का पता नहीं था कि अयोध्या नरेश का कोई पुत्र भी है।

सूर्यसेन को मुरली बजाने का बड़ा शौक था। वह रोज सवेरे मुरली की मधुर तान छेड़ता था। एक दिन उसकी मुरली की मधुर ध्वनि काशी नरेश के कानों में पड़ी तो वह उसके सुरों में खोकर कुछ देर अपनी सुध-बुध बिसरा बैठा। राजा ने महावत को बुलाकर पूछा- तुम्हारे घर में सवेरे-सवेरे इतनी सधी हुई तान पर मीठे सुरों में मुरली कौन बजाता है?

राज्य काशी में रह रहे हैं। फिर क्या था, राजा ने दोनों को बंदी बना लिया। उसके बाद दोनों को मृत्युदंड का आदेश दे दिया। माता-पिता को मृत्युदंड का समाचार सुनकर पुत्र सूर्यसेन उनके अंतिम दर्शन करने के लिये कारागार में गया। पुत्र को प्यार करके पिता ने अंतिम समय में उसे कुछ बातों पर चलने का उपदेश दिया और कहा-

* पुत्र! न तो अधिक देखना और न थोड़ा देखना।
* यह स्मरण रहे कि हिंसा कभी भी प्रतिहिंसा द्वारा पराजित नहीं होती।
* लड़ाई को कभी लड़ाई से नहीं जीता जा सकता।
* शत्रुता से शत्रुता कभी भी समाप्त नहीं होती।

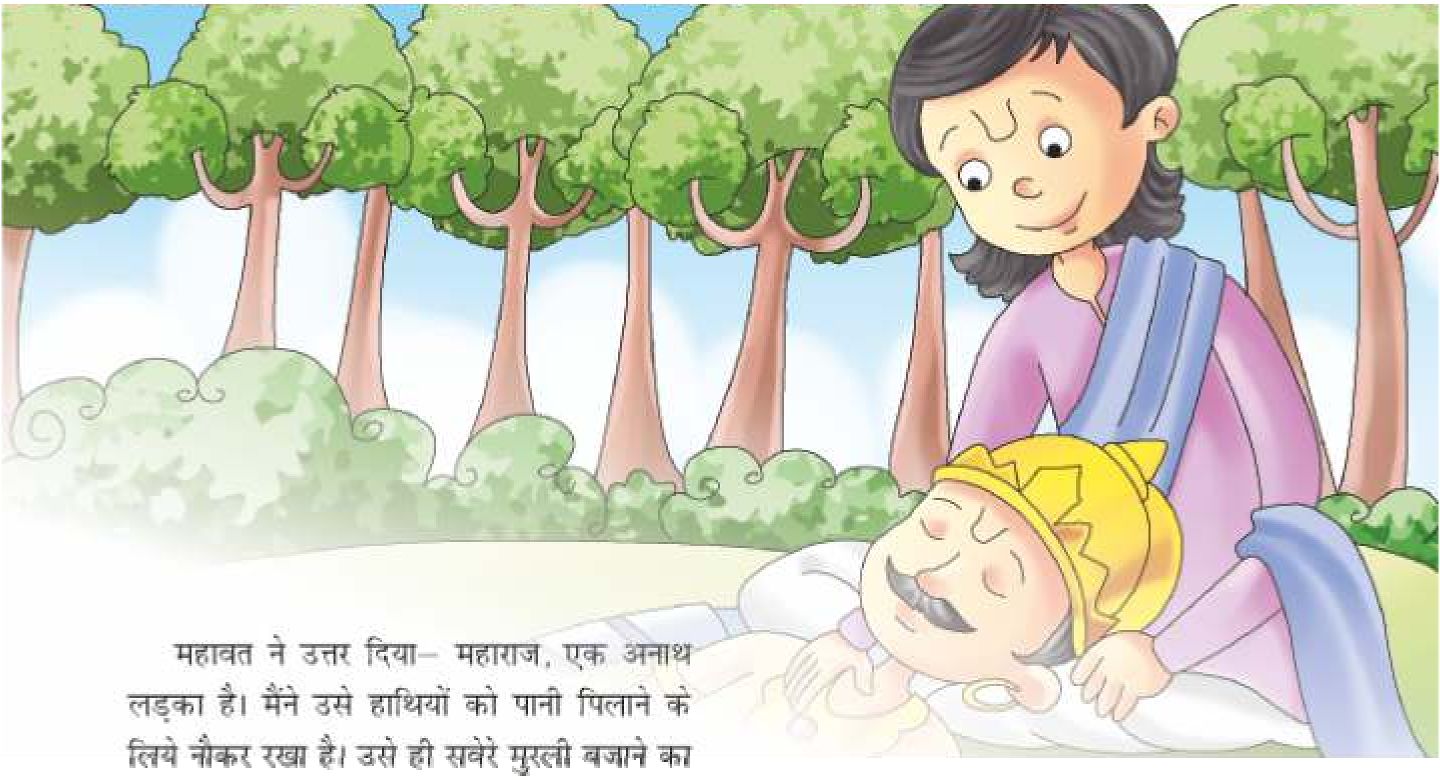

महावत ने उत्तर दिया– महाराज, एक अनाथ लड़का है। मैंने उसे हाथियों को पानी पिलाने के लिये नौकर रखा है। उसे ही सवेरे मुरली बजाने का शौक है।

काशी नरेश ने महावत से कहा– उस युवक को मेरे पास लेकर आना।

राजा की आज्ञा के अनुसार महावत सूर्यसेन को काशी नरेश के पास ले गया। नरेश ने देखा सूर्यसेन एक तेजस्वी, लम्बा, बलिष्ठ, सुन्दर और गोरे रंग का युवक था। उसके चेहरे से लगता था जैसे वह कहीं का राजकुमार हो। काशी नरेश ने उसकी कद–काठी और रूप रंग से प्रभावित होकर उसे अपना अंगरक्षक नियुक्त कर लिया।

एक दिन काशी नरेश शिकार खेलने के लिये गया। घने जंगल में रास्ता भटककर वह अपने अन्य साथियों से बिछुड़ गया। एक घोड़े पर राजा था और दूसरे पर उसका अंगरक्षक सूर्यसेन। दोनों ही थककर चूर हो गये थे। इसीलिये एक वृक्ष की छाया में जा बैठे। गर्मी के दिन थे, राजा बहुत थक गया था; इसीलिये वह सूर्यसेन की गोद को तकिया बनाकर एकदम गहरी नींद में खर्राटे भरने लगा। काशी नरेश गहरी नींद सोया था, तभी सूर्यसेन को ध्यान आया कि यह वही क्रूर राजा है जिसने मेरे निर्दोष माता–पिता को फाँसी पर लटकाया था। इससे अच्छा मौका और क्या होगा? क्यों न उनके खून का बदला आज इसके प्राण लेकर चुका लूं। उसकी आँखों में प्रतिशोध की ज्वाला दहक उठी। उसने तुरन्त म्यान से तलवार खींच ली जैसे ही उसने तलवार उठाई, पिता का उपदेश उसे एकदम याद हो आया– 'स्मरण रहे कि हिंसा कभी भी प्रतिहिंसा द्वारा पराजित नहीं होती।' कुछ देर वह विचारों में डूबा रहा। फिर चुपचाप तलवार म्यान में रख ली। थोड़े समय के बाद राजा की आँख खुल गई। बैठते हुए काशी नरेश ने कहा– सूर्यसेन! आज मैंने एक बहुत बुरा सपना देखा है। मुझे ऐसा लगा जैसे कोई नंगी तलवार लेकर मेरी गर्दन काटने के लिये मेरे पीछे दौड़ रहा है।

काशी नरेश की बात सुनकर सूर्यसेन ने तलवार म्यान से फिर बाहर खींच ली और बोला–

आपका सपना गलत नहीं था महाराज! मैं अयोध्या नरेश चन्द्रसेन का पुत्र हूँ। आपने बिना किसी अपराध के मेरे माता-पिता को मृत्यु के घाट उतारा है, आज मैं उसका बदला लूंगा।

राजा ने सूर्यसेन को साक्षात् मौत के रूप में सामने खड़ा देखकर दोनों हाथ जोड़ दिये और कहा– बेटा, मुझे क्षमा कर दो। मैं तुमसे अपने जीवन की भीख मांगता हूँ। मैं तुम्हारी शरण में हूँ।

–नहीं राजन्! अगर मैंने आपको जीवनदान दे दिया तो आप मुझे भी प्राणदंड देकर मरवा डालेंगे।

–नहीं बेटा, ईश्वर को साक्षी मानकर मैं शपथ लेता हूँ कि तुम्हें कोई भी सजा नहीं दूंगा– राजा ने कहा।

सूर्यसेन ने तलवार को वापस म्यान में रख लिया और अपने पिता द्वारा दिये गये उपदेशों के विषय में राजा को बताया और कहा आज आपकी जान केवल मेरे पिता के उपदेश के कारण ही बची है अन्यथा मुझ पर तो बदले का भूत सवार था।

राजा ने उत्सुकतावश पूछा– वे उपदेश क्या हैं पुत्र! मुझे भी बताओ।

सूर्यसेन ने कहा– महाराज! उनका पहला उपदेश था कि 'न तो अधिक देखना और न थोड़ा देखना अर्थात् हिंसा को अधिक दिनों तक दिल में बसाकर नहीं रखना चाहिए तथा अपने बंधु अथवा मित्र का दोष देखकर उससे सहज ही संबंध मत तोड़ लेना।' इसी तरह सूर्यसेन ने आगे के चार उपदेश भी बता दिये। उनके स्पष्टीकरण की आवश्यकता ही नहीं थी।

काशी नरेश राजा चन्द्रसेन के उपदेशों को सुनकर गद्गद् हो उठे। उनके मन-मस्तिष्क पर इनका गहरा प्रभाव पड़ा। उनके नेत्रों से पश्चाताप के आँसू बह निकले। वह सूर्यसेन से बोले– "पुत्र! तूने मेरा पाप नष्ट कर दिया है। आज मेरे शेष जीवन में पुण्य का सूर्य उदय हो उठा है।" कहकर उन्होंने सूर्यसेन को छाती से लगा लिया।

लौटकर उन्होंने सूर्यसेन को उसका राजपाट वापस कर दिया।

–वास्तव में अहिंसा की तलवार हिंसा की तलवार से कहीं अधिक तेज है।

मेघालय का राजकीय पशु

बादली तेंदुआ

तेंदुआ बिल्ली परिवार का सर्वाधिक तेज, फुर्तीला और चालाक वन्यजीव है। इसे जंगल का राजकुमार कहते हैं। यह मुख्य रूप से रूस, चीन, कोरिया, ईरान, ईराक आदि दक्षिणी-पूर्वी एशिया के देशों और अफ्रीका के अनेक भागों में पाया जाता है। भारत में तेंदुआ हिमालय के पर्वतीय क्षेत्रों से लेकर दक्षिण भारत तक के सभी स्थानों पर मिलता है। इसमें विभिन्न प्रकार की परिस्थितियों के अनुसार अपने को ढालने की विलक्षण क्षमता होती है। यही कारण है कि यह हिमालय के बर्फीले क्षेत्रों, घास के मैदानों, चारागाहो, वर्षा वनों, खुले जंगलों आदि में सरलता से रह सकता है। इसे अर्ध रेगिस्तानी भागों में भी देखा जा सकता है। वास्तव में जहाँ पर भी थोड़ा बहुत शिकार उपलब्ध हो वहाँ तेंदुआ मिल सकता है। अपने इसी विलक्षण गुण के कारण यह एक विशाल क्षेत्र में फैल गया है और अभी तक अपना अस्तित्व बनाये रखने में सफल है।

तेंदुए को अंग्रेजी में 'लेपर्ड' अथवा 'पैंथर' कहते हैं। इसकी मुख्य रूप से तीन जातियां हैं- सामान्य तेंदुआ, हिम तेंदुआ और बादली तेंदुआ। बादली तेंदुए को मेघालय ने अपना राज्य पशु घोषित किया है।

तेंदुआ प्रायः अकेले ही विचरण करता है। इसकी सभी इन्द्रियां अति संवेदनशील होती हैं तथा इसमें छिपने की प्रवृत्ति सिंह और शेर आदि जीवों से अधिक होती है। तेंदुए के सम्बन्ध में यह कहा जाता है कि जहाँ छोटी-छोटी झाड़ियों और घास के मध्य शेर और सिंह अपना सर नहीं छिपा पाते, वहाँ तेंदुआ अपना पूरा शरीर बड़ी कुशलता से छिपा लेता है। तेंदुआ दोपहर के समय धूप और गर्मी से बचने के लिए लम्बी-लम्बी घासों के मध्य अथवा किसी छायादार स्थान पर आराम करता है और प्रातःकाल तथा सूरज ढलने के बाद शाम से लेकर रात तक सक्रिय रहता है। किन्तु जहाँ इसका शिकार किया जाता है, वहाँ यह रात्रिचर हो गया है। तेंदुआ छलांगे लगाने में बड़ा कुशल होता है। तेंदुए की शारीरिक संरचना इस प्रकार की होती है कि काफी ऊँचाई से कूदने पर भी इसे कहीं चोट नहीं लगती।

तेंदुए की शारीरिक संरचना सिंह और चीते के समान होती है किन्तु अलग-अलग स्थानों पर पाये जाने वाले तेंदुओं के आकार में काफी भिन्नता होती है। इसी प्रकार इसकी विभिन्न प्रजातियों के आकार और शरीर के रंगों आदि में पर्याप्त विविधता देखी जा सकती है। सामान्य तेंदुआ 2.1 मीटर से लेकर 2.5 मीटर तक लम्बा होता है। इसमें इसकी 70-80 सेन्टीमीटर लम्बी पूँछ भी सम्मिलित है। तेंदुए का वजन 45 किलोग्राम से लेकर 60 किलोग्राम तक होता है, किन्तु कभी-कभी इससे भारी तेंदुए भी देखने को मिल जाते हैं। मादा तेंदुआ नर तेंदुए से छोटी होती है तथा शक्ति में भी यह नर से कम होती है। तेंदुए का शरीर इकहरा और कसा हुआ होता है। इसकी त्वचा के रंगों और बालों की लम्बाई पर स्थान और परिवेश का सीधा प्रभाव पड़ता है। यही कारण है कि अलग-अलग स्थानों और अलग-अलग परिवेश में रहने वाले तेंदुए का रंग और बालों की लम्बाई में पर्याप्त भिन्नता होती है। सामान्य तेंदुए के शरीर का आधारभूत रंग भूरापन लिये हुए

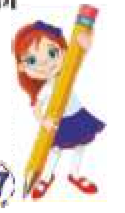

पीला तथा पेट और शरीर के नीचे का भाग सफेदी लिये हुए होता है तथा पूरे शरीर पर काले रंग के धब्बे अथवा चित्तियां होती हैं।

हिम तेंदुआ (स्नो लेपर्ड) हिमालय पर्वत के 3600 मीटर से लेकर 4000 मीटर तक की ऊँचाई वाले बर्फ से ढके भागों और पर्वतीय वनों में पाया जाता है। इसकी शारीरिक संरचना सामान्य तेंदुए से कुछ अलग होती है। हिम तेंदुए का चेहरा गोल, मस्तक ऊँचा होता है। इसके शरीर के अधिकांश भाग का रंग सफेदी लिये हुए हल्के धूसर रंग का होता है एवं पेट और नीचे का भाग सफेद होता है। हिम तेंदुआ हमेशा रात में शिकार करता है। यह मुख्य रूप से कस्तूरी मृग, जंगली बकरियों और भेड़ों आदि का शिकार करता है। कभी-कभी यह पालतू भेड़ों और बकरियों को भी अपना निशाना बनाता है। यह शिकार न मिलने पर चूहों, छिपकलियों तथा इसी प्रकार के छोटे जीवों से भी अपना काम चला लेता है। हिम तेंदुआ बड़ा खतरनाक होता है। यह कभी-कभी मानव पर भी आक्रमण कर देता है।

काला तेंदुआ (ब्लैक पैंथर) भारत के दक्षिण में पश्चिमी घाट के घने जंगलों में रहता है। इसकी शारीरिक संरचना सामान्य तेंदुए के समान होती है किन्तु सर से लेकर पूंछ तक इसका पूरा शरीर काले रंग का होता है। काला तेंदुआ सामान्य तेंदुए की तरह दिन में विश्राम करता है और रात को शिकार की तलाश में निकलता है। इसका काला शरीर रात के अंधेरे में आसपास के परिवेश से इतना घुल-मिल जाता है कि बिल्कुल पास खड़ा काला तेंदुआ भी दिखाई नहीं देता। बस इसकी दोनों आंखें छोटे-छोटे बल्ब की तरह चमकती हुई नजर आती हैं। जीव वैज्ञानिकों का मत है कि काला तेंदुआ कोई अलग जाति नहीं है। इसका विकास सामान्य तेंदुए के शरीर पर पाये जाने वाले काले रंग के धब्बों और चित्तियों के विकास से हुआ है। काले तेंदुए की सभी आदतें, व्यवहार और शिकार आदि का ढंग सामान्य तेंदुए के समान होता है। अतः यह कहा जा सकता है कि काला तेंदुआ सामान्य तेंदुए का ही एक रूप है।

बादली तेंदुआ (क्लाउडेड लेपर्ड) की संख्या एशिया की गुर्राने वाली बड़ी बिल्लियों में सर्वाधिक है। यह भारत में आसाम, सिक्किम और इसके आसपास के कुछ भागों में पाया जाता है। यह भारत के साथ ही नेपाल, भूटान, म्यांमार, मलाया, बोर्नियो, सुमात्रा, फारमोसा और चीन के कुछ भागों में भी पाया जाता है। यह अत्यंत घने जंगलों में रहता है और अपना अधिकांश समय वृक्षों पर व्यतीत करता है। हिम तेंदुए के समान बादली तेंदुआ भी अत्यंत दुर्गम स्थानों में अपना आवास बनाता है। अतः इसके सम्बन्ध में अधिक जानकारी उपलब्ध नहीं है।

बादली तेंदुआ सदाबहार वनों का प्राणी है। यह सामान्य तेंदुए से काफी छोटा होता है। बादली तेंदुए की कंधों तक की ऊँचाई 50 सेंटीमीटर से 55 सेंटीमीटर तक पूंछ सहित लम्बाई लगभग दो मीटर और शरीर का वजन 18 किलोग्राम से 20 किलोग्राम तक होता है। इसकी त्वचा का रंग गहरे कत्थई से लेकर पीला तक होता है एवं पेट और शरीर के नीचे का भाग सफेद होता है। बादली तेंदुए के पूरे शरीर पर काले रंग के धब्बे होते हैं। इसकी पीठ पर काले रंग के दो मोटे-मोटे पट्टे होते हैं एवं बीच में एक पतला पट्टा होता है। ये सभी पट्टे लम्बाई में होते हैं। बादली तेंदुए के सर और चेहरे पर भी गहरे रंग की धारियां और धब्बे होते हैं एवं दोनों कानों के पीछे वाला भाग काले रंग का होता है। इसकी पूंछ लम्बी और झबरीली होती है तथा इस पर काले रंग के गोल-गोल

छल्ले होते हैं इसके पूरे शरीर पर छोटे-छोटे बाल होते हैं।

बादली तेंदुए के जबड़े बड़े मजबूत होते हैं तथा ऊपर के जबड़ों के कैनाइन दांत काफी लम्बे होते हैं जिससे इसे शिकार करने में सुविधा रहती है। इसके जबड़ों की पकड़ इतनी मजबूत होती है कि एक बार जो भी शिकार इसकी पकड़ में आ जाता है, वह बच नहीं पाता। बादली तेंदुआ कुशल शिकारी वन्यप्राणी है। इसके आगे के पंजे काफी चौड़े होते हैं तथा इनकी संरचना इस प्रकार की होती है कि यह इनसे छोटी-छोटी चिड़ियों को भी पकड़ लेता है और अपना आहार बना लेता है। वयस्क और युवा बादली तेंदुए प्रायः बड़े जीवों का शिकार करते हैं। ये दिन के समय विश्राम करते हैं और रात में शिकार की खोज में बाहर निकलते हैं तथा अपने बराबर अथवा अपने से भी बड़े और भारी जीवों को सरलता से मार लेते हैं।

मादा एक बार में दो अथवा तीन बच्चों को जन्म देती है किन्तु इसे छः बच्चों तक को जन्म देते हुए भी देखा गया है। तेंदुए के बच्चे सिंह और शेर के बच्चों के समान जन्म के समय पूर्णतया असहाय होते हैं तथा इनकी आंखें बन्द रहती हैं। जन्म देने के बाद मादा अपने बच्चों को दूध पिलाती है, उनकी सुरक्षा करती है तथा पूरी सावधानी के साथ उनका पालन-पोषण करती है। तेंदुए के बच्चों के शरीर पर जन्म के समय से ही बाल होते हैं तथा इनका विकास सिंह और शेर के बच्चों की तुलना में तीव्र गति से होता है। ये लगभग 10 दिन में आंखें खोल देते हैं और मादा के साथ इधर-उधर खेलना आरम्भ कर देते हैं। तेंदुए के बच्चे बचपन से ही बहुत तेज और चालाक होते हैं तथा आपस में खूब खेलते हैं, शैतानी करते हैं और शोर मचाते हैं।

तेंदुए के बच्चों के विकास में मादा की महत्वपूर्ण भूमिका होती है। यह अपने बच्चों के कुछ बड़े हो जाने पर उन्हें शिकार लाकर खिलाती है और छोटे-छोटे प्रशिक्षण देती है। तेंदुए के बच्चे जब सात-आठ माह के हो जाते हैं तो मादा के साथ शिकार पर जाने लगते हैं और शिकार करना सीखते हैं। ये दो वर्ष की आयु में अल्पवयस्क हो जाते हैं और स्वतंत्र रूप से शिकार करना आरम्भ कर देते हैं।

तेंदुए की आयु सिंह और शेर के समान ही होती है। यह जंगल में लगभग बारह से पन्द्रह वर्ष तक जीवित रहता है। चिड़ियाघरों में इसकी आयु बढ़ जाती है। एक तेंदुआ एक चिड़ियाघर में 23 वर्ष तक जीवित रहा था। तेंदुआ एक तेज फुर्तीला, चालाक और निडर वन्यजीव है।

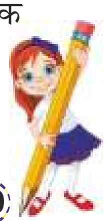

वैज्ञानिक जानकारी : घमण्डीलाल अग्रवाल

विज्ञान प्रश्नोत्तरी

प्रश्न : खीरा कड़वा क्यों होता है?

उत्तर : खीरे में कड़वापन होता है। जानते हो क्यों? दरअसल, कुछ फलों में यौगिक तत्व उपस्थित रहते हैं। खीरे में भी ऐसा ही है। खीरे में गंधक एवं पोटाश का संयोग होने के कारण कड़वापन आ जाता है। इससे बचने के लिए खीरे को खाने से पहले डंठल की ओर से काटकर एवं नमक लगाकर भली-भांति रगड़ना उचित रहता है।

प्रश्न : मंद गति एवं मधुर धुनों वाला संगीत स्वास्थ्य के लिए लाभदायक क्यों है?

उत्तर : यह सही है कि तनाव को दूर करने के लिए संगीत का सहारा लिया जाता है। लेकिन धीमी एवं मध्यम गति (कर्णप्रिय) के संगीत को सुनकर ही मन को राहत मिलती है। तेज गति एवं धुनों वाला संगीत कदापि लाभदायक नहीं होता क्योंकि इससे श्वास एवं हृदय-गति तेज हो जाती है। मंद गति एवं मधुर धुनों वाले संगीत से रक्तचाप में भी कमी आती है एवं यह हृदय के लिए भी लाभकारी है।

प्रश्न : हथेलियों और पाँवों के तलवों पर बाल क्यों नहीं उगते हैं?

उत्तर : शरीर के तमाम हिस्सों पर बाल होते हैं मगर हथेलियों और पाँवों के तलवों पर बाल नहीं उगते। दरअसल, त्वचा दो सतहों से मिलकर बनती है– डर्मिस तथा एपिडर्मिस। बालों की जड़ें इन्हीं सतहों के ऊपरी हिस्सों में मौजूद रहती हैं। डर्मिस या एपिडर्मिस में से कोई भी सतह जब आवश्यकता से अधिक विकसित हो जाती है यानि मोटी हो जाती है तो वहाँ पर बालों की जड़ों की वृद्धि रुक जाती है। जैसे– हथेलियों और पाँवों के तलवे। इनमें डर्मिस शरीर के अन्य हिस्सों की अपेक्षा अधिक मोटी हो जाती है। यही वजह है कि हथेलियों और पाँवों के तलवों पर बाल नहीं उगते हैं।

प्रश्न : जानवरों में पूंछ क्यों होती है?

उत्तर : मनुष्य के अतिरिक्त रीढ़ की हड्डी वाले अधिकांश प्राणियों में पूंछ (Tail) पाई जाती है। जानते हो क्यों? दरअसल, प्राणियों की पूंछ उन्हें सुरक्षा और सहारा दोनों प्रदान करती है। कई बार पूंछ उन्हें अन्य जानवरों का शिकार करने में भी मददगार बनती है। मछली की पूंछ के चारों ओर लगे पंख उसे पानी में तैरने में सहायता प्रदान करते हैं। छिपकली अपनी पूंछ का प्रयोग शत्रु को देखने में करती है। स्तनधारी जीवों (गाय, भैंस, घोड़े) में पूंछ मक्खी और मच्छरों को भगाने में सहायक बनती है। कुछ जीवों (बंदर, गिलहरी, कंगारू) में यही पूंछ उनका संतुलन बनाए रखती है।

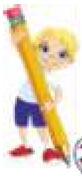

कविता : हरजीत निषाद

चुनमुन चिड़िया आती है

ठण्ड दूर जब जाती है।
गर्मी तब आ जाती है।
तेज धूप संग लाती है।
आकर बहुत सताती है।
चुनमुन चिड़िया आती है।

बाहर जब वह जाती है।
गर्म थपेड़े खाती है।
गर्मी सही न जाती है।
पत्तों में छिप जाती है।
चुनमुन चिड़िया आती है।

माँ इक बरतन लाती है।
पानी से भर आती है।
चिड़िया प्यास बुझाती है।
पीकर वह उड़ जाती है।
चुनमुन चिड़िया आती है।

भोर हुए उठ जाती है।
दाना दुनका खाती है।
अपनी भूख मिटाती है।
मीठे गीत सुनाती है।
चुनमुन चिड़िया आती है।

कभी न वह घबराती है।
सच्ची बात बताती है।
हमको यह समझाती है।
श्रम की सच्चा साथी है।
चुनमुन चिड़िया आती है।

कहानी : मेघा जैन

करोगे सेवा

तो पाओगे मेवा

हल्दी और सौंठ दो पक्की सहेलियां थीं। दोनों एक ही गाँव में साथ-साथ रहती थीं। हल्दी तो थी बड़ी बुद्धिमान और प्रत्येक काम में रूचि रखने वाली। पर सौंठ पहले दरजे की कामचोर और आलसी थी। वार्षिक परीक्षाओं के बाद जब गर्मियों की छुट्टियां आईं तब हल्दी ने सोचा– चलो, नानी के घर छुट्टियां बिताएं।

नानी का घर काफी दूर था। जब हल्दी घर से चली तब उसे मार्ग में एक गाय मिली। गाय के चारों ओर गोबर बिखरा पड़ा था और उस

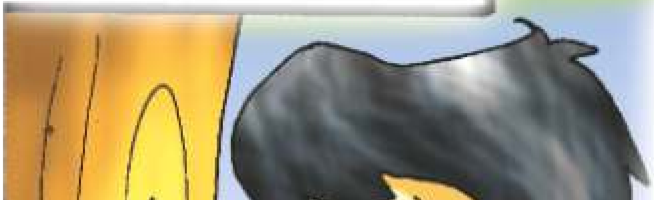

पर मक्खियां भिनभिना रही थीं। गाय ने हल्दी को देखा तो बोली– हल्दी बिटिया, जरा मेरे पास की जगह साफ तो करती जा, ताकि मैं आराम से बैठ सकूं।

हल्दी ने झटपट जगह साफ-सुथरी कर दी और वह आगे बढ़ चली। कुछ दूर चलने के बाद उसे एक बहुत बड़ा पीपल का पेड़ मिला। पीपल के नीचे फटे कागज और बहुत-सा कूड़ा-करकट बिखरा पड़ा था। पीपल का पेड़ बोला– हल्दी बेटी, मेरी छांव में बहुत से लोग आकर आराम तो कर लेते हैं, परन्तु सारी जगह गन्दी कर जाते हैं। क्या तू इसे साफ कर देगी।

–क्यों नहीं बाबा!– ऐसा कहकर हल्दी ने देखते-देखते पीपल के आसपास की सारी जगह साफ कर दी और वह आगे बढ़ गई।

थोड़ी देर में वह नानी के घर जा पहुँची। घर के सारे कामों को वह और नानी दोनों मिलकर करती थीं। लेकिन हल्दी नानी के प्रत्येक कार्य को स्वयं पूरा करने के चक्कर में रहती थी। जिस कारण नानी हल्दी से बहुत प्रसन्न रहती थी और उसे बहुत प्यार करती थी। जब हल्दी के घर लौटने का समय आया तब नानी ने भीगी पलकों से हल्दी को गले से लगाया और वह

बोली– तू तो हीरा है, बेटी हीरा। ऐसी बेटी पाकर हमारे तो भाग्य खुल गये। बिटिया, अगली छुट्टियों में फिर जरूर आना, मैं इन्तजार करूंगी।– फिर नानी ने हल्दी को अनेक कीमती उपहार देकर उसे विदा किया।

लौटते समय हल्दी को वही पीपल का पेड़ मिला। जिसकी प्रत्येक शाखा पर सुन्दर-सुन्दर कपड़े लटके हुए थे। पीपल का पेड़ बोला– हल्दी, तुझे जितने कपड़े चाहिएं तू ले ले।– हल्दी ने कुछ सुन्दर वस्त्र ले लिए और वह आगे चल दी।

अब उसे वही गाय मिली। गाय बोली– हल्दी तुझे जितना दूध चाहिये पी ले और मेरे इस बछड़े को अपने घर लेती जा।– हल्दी ने गाय का थोड़ा-सा दूध पिया और फिर वह बछड़े को साथ लेकर अपने घर जा पहुँची।

सौंठ ने जब हल्दी के पास इतनी सारी चीजें देखी तब वह समझी कि वह ये सब नानी के घर से लाई है। बस, वह भी अपनी नानी के घर जाने को तैयार हो गई। रास्ते में उसे भी गाय मिली जिसने उससे गोबर साफ करने को कहा। सौंठ तो ठहरी घमण्डी, वह ठुमकती हुई बोली– वह थी हल्दी-पल्दी। मैं हूँ सठुआ सौंठ। मैं क्यों साफ करूं?

सौंठ का उत्तर पाकर गाय चुप रही। फिर उसे मार्ग में पीपल का पेड़ मिला। उसने सौंठ से अपनी गन्दी जगह साफ करने को कही तो उसको भी सौंठ ने वही उत्तर दिया जो गाय को दिया था।

सौंठ नानी के घर पहुँची तब वहाँ सारे दिन वह हाथ पर हाथ धरे बैठी रहती। नानी बूढ़ी तो थी ही ऊपर से उसे अपने काम के साथ सौंठ का काम भी करना पड़ता था, जिससे वह बेचारी बहुत थक जाती थी। सौंठ उसके लिए एक बोझ बन गई थी। जब सौंठ वापस अपने घर जाने लगी तब नानी ने उसे झटपट बिना कुछ उपहार दिये विदा कर दिया।

घर लौटते समय उसे पेड़ और गाय मिले। पीपल ने उस पर अपने सूखे पत्ते गिराए और गाय ने उसे एक जोर की लात मारी। बेचारी घमण्डी सौंठ गिरती-पड़ती अपने घर की ओर चल दी।

सौंठ सोचने लगी हल्दी के पास क्या है कि उसे सभी ने ढेर सारे उपहार दिये। फिर उसे रहस्य समझ में आया।– उसे सेवा का फल मिला।

किट्टी

चित्रांकन एवं लेखन
अजय कलड़ा

अरे किट्टी! इस लेंस को रख दो। यह तुम्हारे काम की चीज़ नहीं है।
मैं तो बस देख रही हूँ, मोंटू।
क्यों न मैं इसे रख लूँ? मोंटू अभी इधर नहीं देख रहा है।
बच्चों! अब हम सब प्रैक्टीकल करेंगे। सभी बच्चे इधर देखेंगे।

वाह! मज़ा आ गया। यह लेंस कितना अच्छा है।
वाह! इस लेंस से देखने पर सब कुछ बड़ा-बड़ा दिखाई दे रहा है। और तो और मेरी पूँछ भी मोटी नजर आ रही है।
बाप रे बाप! आग...आग। मेरी पूँछ जल गई। कोई है। बचाओ! बचाओ!

अरे किट्टी! यह क्या कर लिया तुमने?
जल्दी से मुझे बचाओ। मुझे बहुत जलन हो रही है।
देखो बच्चो! हमें जिस चीज़ का ज्ञान न हो उससे छेड़-छाड़ नहीं करनी चाहिए। हुआ यह होगा कि जब किट्टी लेंस से अपनी पूछ देख रही होगी तो सूर्य की किरणें इस लेंस से पूँछ पर केंद्रित हो गई और उससे आग लग गई।
मुझे माफ कर दीजिए। मैं आगे से ऐसा कोई काम नहीं करूँगी।

स्वास्थ्य सम्बन्धी लेख : मीना

गर्मियों में तरावट पहुँचाएगी : ककड़ी

गर्मी के मौसम में बहुतायत से सब्जीमंडी में आने वाली ककड़ी देश के प्रायः हर हिस्से में सहजता से उपलब्ध हो जाती है। ककड़ी का वनस्पतिक नाम 'कुकमिस मेलो वार युटिलिस्सीमस' है। वैसे इसे संस्कृत में 'त्रपुस', हिन्दी में 'खीरा' और 'ककड़ी', मराठी में 'काकड़ी' और 'तोसे', गुजराती में 'तासली', बंगला में 'शशा', अंग्रेजी में 'कुकुम्बर' कहा जाता है। वैज्ञानिक शोध बताती है कि ककड़ी का जन्मस्थान भारत, मिस्र और इटली है।

आयुर्वेद के अनुसार ककड़ी मधुर, शीतल, छाती की जलन और प्यास को मिटाने वाली होती है। आयुर्वेद के ग्रंथों में ककड़ी को एक 'औषधिय फल' निरुपित किया गया है।

ककड़ी गर्मियों में मन-मस्तिष्क को तरावट व ठंडक पहुँचाने वाली होती है, किन्तु इसका ठंडक पहुँचाने वाला गुण इसमें बहुतायत से मौजूद जलीय अंश में न होकर इसमें पर्याप्त मात्रा में पाये जाने वाले सोडियम की वजह से होता है। सोडियम केवल शरीर को ठंडक नहीं पहुँचाता अपितु रक्त को क्षारत्व भी प्रदान करता है। वैसे ककड़ी में सोडियम के अतिरिक्त कैल्शियम, मैग्नीशियम, फास्फोरस, क्लोराइड, सल्फर और आयरन भी प्रचुर मात्रा में विद्यमान होता है। विटामिन 'ए' आंशिक रूप से और 'बी' और 'सी' पर्याप्त मात्रा में ककड़ी में उपलब्ध होता है।

नरम, पतली और लम्बी तरककड़ी हो या खीरा ककड़ी, इसको कच्ची चाव से खाई जाती है। सलाद में भी ककड़ी की अपनी उपयोगिता है। पकी हुई ककड़ी के बीज ठंडे और दिमाग को तरावट देने वाले होते हैं। ककड़ी की सब्जी भी बनाकर खाई जाती है। वैसे ककड़ी, कच्ची खाने से सम्पूर्ण गुणों का लाभ मिलता है।

ककड़ी स्वादिष्ट होने के साथ-साथ अपने औषधिय गुणों के कारण भी लोकप्रिय है। आइए, ककड़ी के कतिपय औषधिय गुणों की चर्चा करें।

- ☆ गर्मी में होने वाले मूत्र विकारों, जैसे पेशाब में जलन आदि में ककड़ी काटकर शक्कर डालें और फिर उस पर नींबू निचोड़कर खाएं।
- ☆ पायरिया रोग में ककड़ी खाने और इसका रस पीने से लाभ होता है।
- ☆ ककड़ी के रस में भुना हुआ जीरा और नमक मिला देने से काफी स्वादिष्ट पेय तैयार हो जाता है। भोजन से पूर्व यदि यह पेय आधा गिलास पी लिया जाए तो भोजन के प्रति रुचि उत्पन्न हो जाती है।
- ☆ ककड़ी का रस त्वचा का रंग निखारता है। चेहरे पर दाग, झाइयां अथवा मुंहासे होने पर रोजाना खाली पेट एक गिलास ककड़ी का रस पीना लाभप्रद होता है।
- ☆ जिन व्यक्तियों को गर्मी या खुश्की हो गई हो, उन्हें नियमित ककड़ी का सेवन लाभप्रद है।

ककड़ी का नियमित सेवन निःसंदेह लाभप्रद है किन्तु इसके सेवन में कतिपय सावधानियां भी अपेक्षित हैं। गर्मी में कभी भी बासी, सड़ी हुई या अधिक देर तक धूप में पड़ी ककड़ी न खाएं। एक साथ अधिक मात्रा में ककड़ी के सेवन से अजीर्ण, अतिसार अथवा हैजा होने की आशंका रहती है। मोटी ककड़ी के डंठल के पास का हिस्सा काटकर बाकी ककड़ी पर घिसकर उसका पित्त निकालना चाहिए। यथासंभव ककड़ी पर काला नमक और काली मिर्च डालकर सेवन करें। ककड़ी को पकाने के स्थान पर कच्ची या सलाद के साथ खाएं अथवा इसका रस निकालकर पीएं तो अधिक लाभ होगा।

दो बाल कविताएं : डॉ. घमंडीलाल अग्रवाल

पानी

दूर वस्त्र की करे गंदगी,
भोजन सरस बनाए।
अकुलाहट को दूर भगाकर,
झटपट प्यास बुझाए।।

दे पेड़ों को नई ताजगी,
जीवों को नवजीवन।
धरती को मुस्कान बांटता,
यह चांदी, यह कंचन।।

सरिता की पहचान यही है,
मेघों की है गरिमा।
मुक्त कंठ से गाते प्राणी
इस पानी की महिमा।।

हवा

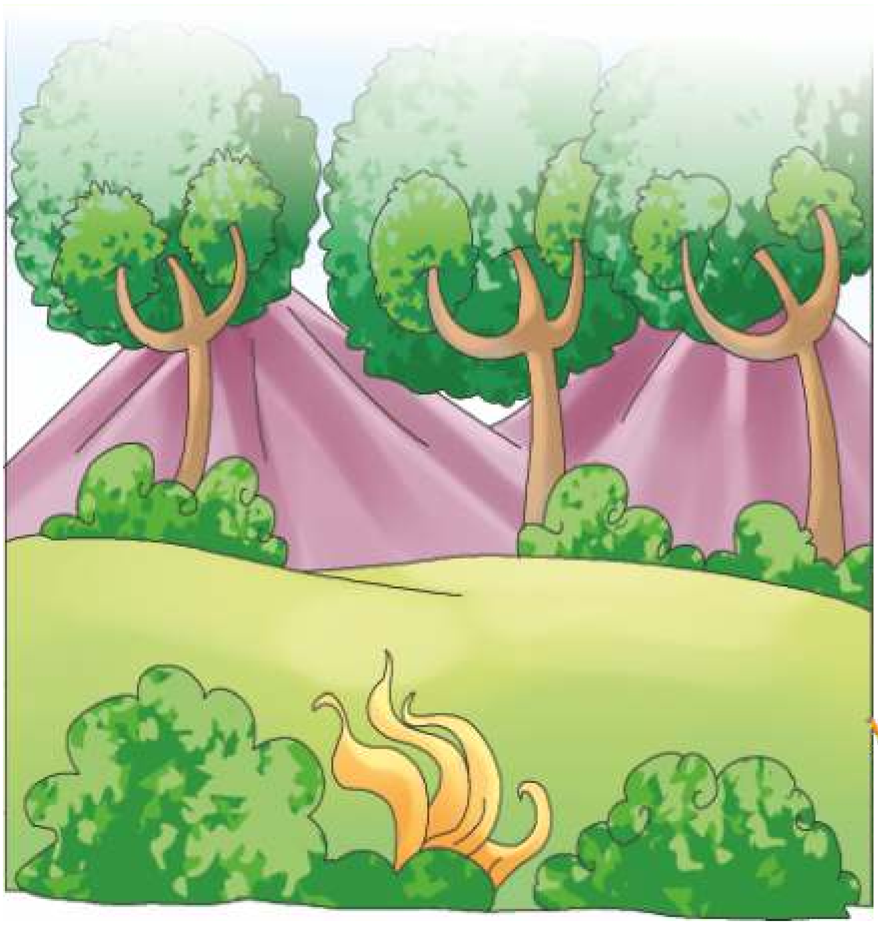

कभी तेज-सी आंधी लाए,
शीतलता का कोष लुटाए।

बूंदों की सौगात कभी दे,
सुख से भरी प्रभात कभी दे।

दूर बदन से करे पसीना,
गरमी का अनमोल नगीना।

सुखा वस्त्रों को देती है,
खुशियों की नौका खे ती है।

पेड़ों की खातिर सुखकारी,
महकाती मन की फुलवारी।

चलना सदा काम है इसका,
हाँ, हाँ 'हवा' नाम है इसका।

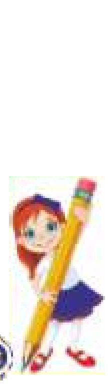

जानकारी : किरणवाला

सबसे बड़ा हेलीकॉप्टर

हेलीकॉप्टर तो आपने अनेक देखे होंगे लेकिन क्या तिमंजिले हेलीकॉप्टर को देखा या उसके बारे में सुना है? नहीं न।

जी हाँ, हम दुनिया के सबसे बड़े हेलीकॉप्टर की बात कर रहे हैं। रूस के इस हेलीकॉप्टर का नाम है 'एमआई-26' इसका वजन 20 टन है और यह अपने ही वजन के बराबर माल ढो सकता है। 20 टन माल को लादकर यह 800 किलोमीटर की दूरी तय करता है।

'एमआई-26' हेलीकॉप्टर कितना बड़ा है इसका अंदाज आप इसी बात से लगा सकते हैं कि इसके सामने 'बोइंग 737' विमान भी बौना नजर आता है।

इस अनोखे हेलीकॉप्टर में दो इंजन लगे हैं। हर इंजन 11400 हार्स पावर का है। इस हेलीकॉप्टर का उपयोग सुदूर क्षेत्रों में सामान भेजने के लिए किया जाता है।

विशेष जानकारी : किरणवाला

सबसे बड़ा

रेडियो टेलीस्कोप

वैसे तो दुनिया में अनेक रेडियो टेलीस्कोप हैं लेकिन क्या आप सबसे बड़े टेलीस्कोप के बारे में जानते हैं? इसका श्रेय चीन को है। उसने 25 सितम्बर 2016 को 500 मीटर चौड़े दुनिया के सबसे बड़े टेलीस्कोप का इन्स्टालेशन का काम पूरा किया और इसी दिन से उसने काम करना शुरू कर दिया।

यह टेलीस्कोप चीन के गुईझाऊ प्रांत में अंडाकार घाटी में लगाई गई है। इसे बनने में 5 साल लगे तथा दो हजार करोड़ का खर्च आया। 1640 फुट चौड़ी है डिश। डिश का आकार 30 फुटबाल ग्राउंड के बराबर है। 4450 पेनल लगे हैं इस टेलीस्कोप में।

यह पहली ऐसी टेलीस्कोप है जिसमें फ्लेक्सिबल ऑप्टिकल केबल का उपयोग हुआ है। वैज्ञानिक इसे सुपर सेंसरेटिव 'कान' बता रहे हैं। यह अंतरिक्ष से मिलने वाले कमजोर से कमजोर रेडियो संकेत को भी सुन पाने में सक्षम है।

विश्व की इस सबसे बड़े रेडियो दूरबीन से दूसरे ग्रहों में जीवन तलाश किया जा सकेगा। अंतरिक्ष और अन्य ग्रहों पर जीवन का पता लगाने के लिए 500 मीटर एपर्चर गोलाकार टेलीस्कोप का काम 2011 में शुरू हुआ था।

इसके पहले 305 मीटर यानि 1000 फुट चौड़ी डिश वाली प्यूर्टो रिको की आदेशिको ऑब्जर्वेटरी सबसे बड़ी टेलीस्कोप थी।

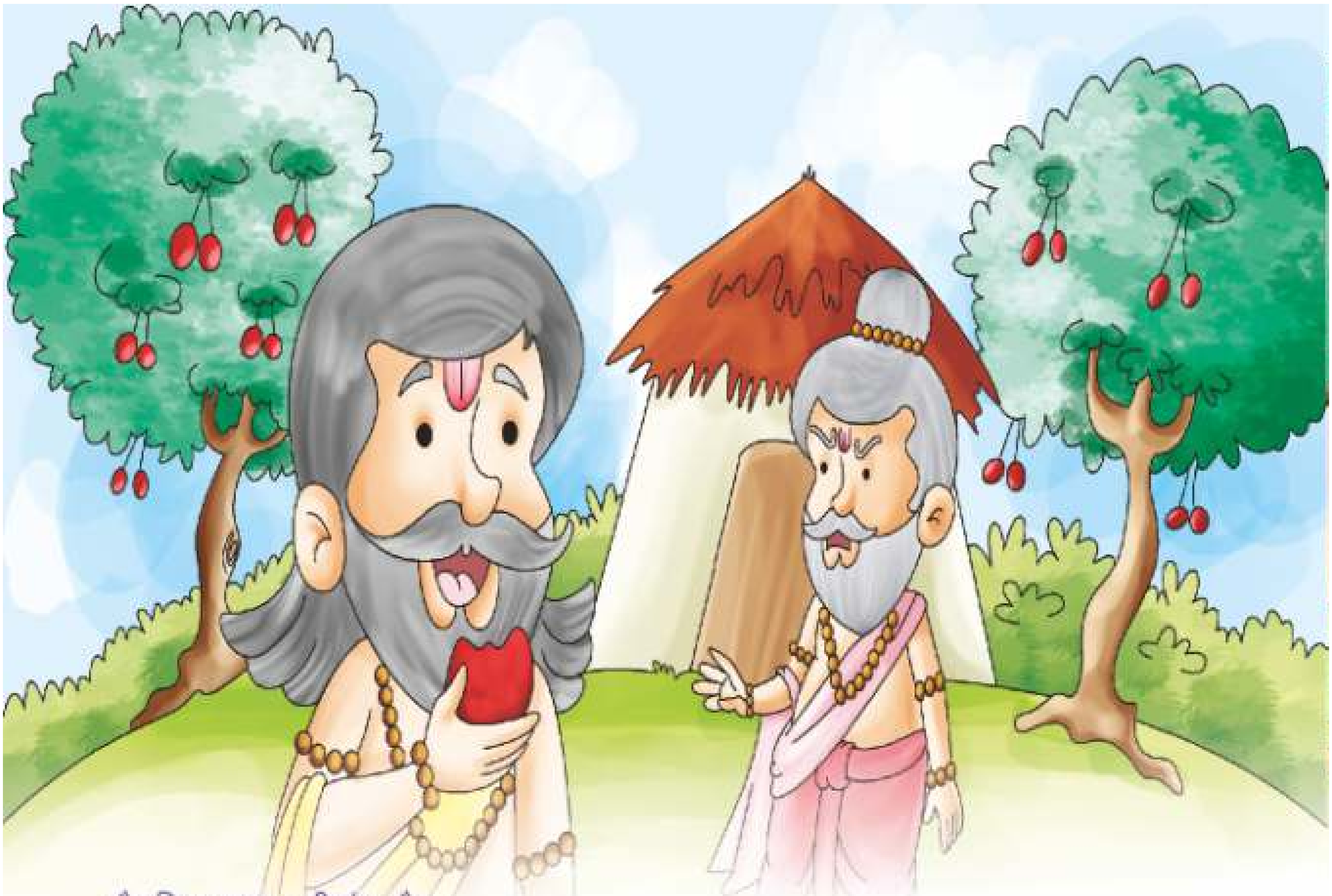

पौराणिक कथा : दीपांशु जैन

चोरी का दंड

गंगा के किनारे दो आश्रम थे। दोनों ही आश्रमों में विद्यार्थी दूर–दूर से पढ़ने आते थे। एक के स्वामी थे शंख और दूसरे के लिखित। दोनों भाई ही थे। शंख बड़े थे और लिखित छोटे। दोनों ही भाई धर्माचार्यों के रूप में भी बहुत प्रसिद्ध थे।

एक दिन की बात है लिखित अपने बड़े भाई शंख के आश्रम पहुँचे। वह कहीं गये हुए थे। कुछ देर लिखित उनकी कुटिया के द्वार पर ही उनकी प्रतीक्षा करते रहे, फिर बगीचे की तरफ निकल गये। टहलते–टहलते उनकी नजर पके हुए सुंदर–सुंदर फलों पर पड़ी। उनका मन मचल गया। उन्होंने हाथ बढ़ाकर कुछ फल तोड़ लिये।

वह उन्हें खाने ही वाले थे कि शंख आ गये। यह देखकर उन्होंने छोटे भाई से पूछा, "क्या भूख ज्यादा लगी है? ये फल तुम्हें कहाँ से मिले?"

लिखित ने आगे बढ़कर पहले उनके पांव छुए फिर बोले, "ये फल आपके आश्रम के ही हैं... भूख तो नहीं थी पर इन्हें देखकर जी ललचा गया।"

इतना सुनते ही शंख गम्भीर हो गये। बोले, "भाई, यह तो चोरी हुई। मुझसे बिना पूछे मेरे आश्रम के फलों को तोड़ने का साहस तुम्हें कैसे हुआ?"

लिखित गर्दन झुकाये मौन खड़े थे।

शंख बोले, "तुम अभी राजा के पास जाओ और कहो कि मैंने चोरी की है, मैं चोर हूँ, मुझे दंड दीजिए।" यह कहकर वह कुटिया की ओर चल दिये। लिखित वहीं खड़े के खड़े रह गये। उनका मन पश्चाताप से भर उठा था।

लिखित राजा के पास पहुँचे। दरबार लगा हुआ था। महाराज किसी संगीन मामले पर फैसला सुना रहे थे। द्वारपाल ने आचार्य लिखित के आने का समाचार महाराज तक पहुँचाया। यह समाचार पाते ही महाराज ने अपने मंत्रियों सहित पैदल चलकर उनकी अगवानी की और पूछा, "आदरणीय, कैसे आना हुआ? कहिए क्या आज्ञा है?"

उत्तर में लिखित ने सारी घटना बयान कर डाली और दंड के लिए महाराज से प्रार्थना करते हुए बोले, "महाराज, देरी न करें क्योंकि मैंने चोरी जैसा काम किया है..." यह सुनकर सभी दंग रह गये। महाराज ने उन्हें बहुत समझाया कि यह कोई ऐसा अपराध नहीं है, जिस पर आप इतने गम्भीर हो गये हैं। लेकिन लिखित थे कि अपनी बात पर अड़े ही रहे।

इस पर राजा ने अपने सहयोगियों से सलाह–मशविरा के लिए थोड़ा समय मांगा। लेकिन लिखित बोले, "राजन! आपके निर्णय में देर हुई तो न्याय नहीं हो सकेगा। हो सकता है कि आपके मंत्रियों को मुझ पर दया आ जाए... या वृद्धजन कहें कि यह ऐसा अपराध नहीं है, जिस पर दंड देना जरूरी हो।"

लिखित का यह उत्तर सुनकर सारी सभा स्तब्ध रह गयी... चूंकि फल उनके हाथों ने तोड़े थे। इसलिए राजा ने उनके हाथ कटवा दिये, परन्तु लिखित एकदम मौन थे। उनके चेहरे पर शिकन तक न थी।

अब लिखित अपने बड़े भैया के पास पहुँचे। उनके पैरों में गिर गये और बोले, "मुझ दंड प्राप्त, पापी भाई को क्षमा करें।"

छोटे भाई का हाल देखकर बड़े भाई की आँखें भर आयीं। उन्होंने आगे बढ़कर लिखित को गले लगा लिया और बोले, "भाई, मैंने क्रोध के वशीभूत होकर तुम्हें राजा के पास नहीं भेजा था, बल्कि तुमसे चोरी जैसा घृणित काम हो गया था, जिसका प्रायश्चित जरूरी था। राजदंड से

"वह हो गया, अब तुम्हारे चरित्र पर कोई दाग नहीं है... अगर ऐसा नहीं होता तो हमारे कुल पर चोरी का कलंक लग जाता।"

"अब आज्ञा दीजिए..."

"जाओ भाई, नदी पर जाओ और नहाकर अपने पूर्वजों को जलांजलि दो और उनकी नाराजगी दूर करो।"

यह सुनकर लिखित को बड़ा आश्चर्य हुआ। बिना हाथों के वह जलांजलि कैसे दे? फिर भी बड़े भाई की आज्ञा मानकर वह नदी तट पर पहुँचे। उन्होंने एक डुबकी लगायी। पर जैसे ही वह बाहर निकले तो उनकी आँखें हैरत से फैल गयीं। उनके दोनों हाथ सही–सलामत थे। वह नदी से बाहर निकले और दौड़े–दौड़े भाई के पास पहुँचे। वह भी यह देखकर बहुत खुश हुए और बोले, "आदमी कितना ही तप करे लेकिन आचरण अगर शुद्ध नहीं हो तो सब बेकार है।"

यह सुनकर लिखित ने झुककर उनके पांव छू लिये।

पढ़ो और हँसो

अधिकारी : (मजदूर से) क्यों भाई रामदीन, दूसरे मजदूर दो-दो बैग ले जा रहे हैं। आखिर तुम ही क्यों एक बैग लेकर जा रहे हो?

मजदूर : साहब! वे मजदूर आलसी है। दो-बार चक्कर लगाने से वे डरते हैं।

एक गृहिणी ने दूधवाले से कहा– इस दूध पर न मलाई आती है और न ही मक्खन आता है।

दूधवाला बोला– बहन जी, मेरी भैंस को मक्खनबाजी से सख्त नफरत है।

पापा : (सोनू से) तुम्हें गणित में कितने नम्बर मिले?

सोनू : जी दिनेश से 10 नम्बर कम।

पापा : दिनेश को कितने नम्बर मिले?

सोनू : जी दस।

शिक्षक : (बच्चे से) तुम इतनी देर से क्यों आये हो?

बच्चा : सर! स्कूल के बाहर सड़क पर बोर्ड पर लिखा था कि 'स्कूल नजदीक है, कृपया धीरे चलें।'

राहुल : कमरे में इतना अंधेरा है, बल्ब क्यों नहीं जलाते?

विकास : बल्ब जलाने के लिए माचिस नहीं है।

राजू : अमरुद तोड़ने का सबसे अच्छा समय कौन-सा होता है?

राजा : जब बाग में माली न हो।

ग्राहक : ये रसगुल्ले कितने के हैं?

दुकानदार : पांच रुपये का एक।

ग्राहक : और ये रस?

दुकानदार : बिल्कुल फ्री में।

ग्राहक : तो मुझे सिर्फ रस दे दो।

अमित : अरे यार, रवि देखकर चला करो, नहीं तो किसी गाड़ी के नीचे आ जाओगे।

रवि : यार, तू घबरा मत। मैं तो कई बार हवाई जहाज के नीचे आ चुका हूँ।

एक साइकिल सवार ने एक बच्चे को टक्कर मार दी। बच्चा रोने लगा। उसने बच्चे को 20 रुपये का नोट दिया।

बच्चा आंसू पोंछ कर बोला, ''अंकल इधर से आप फिर कब गुजरेंगे?'' **– मनोज कुमार (दिल्ली)**

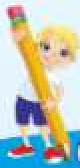

एक आदमी यूनिवर्सिटी के चौकीदार से– ये यूनिवर्सिटी कैसी है?

चौकीदार बोला– जबरदस्त ... मैंने एम.बी.ए. यहीं से किया है और फौरन नौकरी भी मिल गई।

राजू : (राकेश से) अरे देखो, भूकम्प आ गया, पूरा घर हिल रहा है।

राकेश : तुम टेंशन क्यों लेते हो? आराम से सो जाओ। घर तो मकान मालिक का गिरेगा ना।

डॉक्टर : (पप्पू से) आपका वजन कितना है?

पप्पू : जी, चश्में के साथ पूरा 75 किलो।

डॉक्टर : और चश्में के बगैर।

पप्पू : जी, मुझे दिखता ही नहीं है, क्या पता?

–आ जाओ कुत्ते से डरो नहीं।– एक व्यक्ति ने घर पर आए मेहमान से कहा।

–यह काटता नहीं क्या?– मेहमान ने पूछा।

–यही तो मैं देखना चाहता हूँ। मैं इसे आज ही खरीदकर लाया हूँ।– व्यक्ति बोला।

– आकाश मेघानी (गोंदिया)

संटी पार्किंग में अपनी कार के पहिए निकाल रहा था।

बंटी : ओए ये क्या कर रहा है?

संटी : कार के दो पहिये निकाल रहा हूँ।

बंटी : लेकिन तू पहिये क्यों निकाल रहा है? ये तो देखने में ठीक लग रहे हैं।

संटी : देख नहीं रहा, यहाँ लिखा है– 'ओनली टू व्हीलर पार्किंग।'

एक व्यक्ति : भाई, ये चार बजे वाली ट्रेन कब आ रही है?

दूसरा व्यक्ति : तीन बजकर साठ मिनट पर।

पहला व्यक्ति : ये रेलवे वाले भी अजीब हैं। जब देखो ट्रेन का टाइम बदल देते हैं।

मोहन ब्लड के विषय में एक किताब पढ़ रहा था।

सोहन : (मोहन से) आज यह किताब क्यों पढ़ रहे हो?

मोहन : डॉक्टर ने कहा है कि कल मेरा 'ब्लड टैस्ट' है। इसलिए टैस्ट की तैयारी कर रहा हूँ।

– अविनाश पुजारी (बड़ौदा)

संग्रहकर्ता : रीटा (दिल्ली)

कभी न भूलो

☆ भगत बालक बनके रहता है यानि कि सीखने के भाव से जीता है।

☆ मानवता की डगर छोड़ने वालों को मानव नहीं कहा जा सकता।

☆ जब सत्य (निरंकार) का ज्ञान होता है तब ये बंधन स्वयं ही टूट जाते हैं। – **निरंकारी मिशन**

☆ सद्गुरु की शरण गये बगैर ब्रह्मज्ञान की प्राप्ति नहीं होती। – **ज्ञानेश्वरी गीता**

☆ जो व्यक्ति सत्य के साथ कर्त्तव्यपरायणता में लीन है, उसके मार्ग में बाधक होना कोई सरल कार्य नहीं है। – **रवीन्द्रनाथ टैगोर**

☆ विजय उसकी होती है जो विजयी होने का साहस रखता है। – **जवाहरलाल नेहरु**

☆ वही बात बोलनी चाहिए जिससे अपने को भी दुख न पहुँचे। – **भगवान बुद्ध**

☆ एक मात्र ईश्वर ही विश्व का पथ-प्रदर्शक और गुरु है। – **रामकृष्ण परमहंस**

☆ देकर भूल जाओ किन्तु लेकर कभी न भूलो। – **सेनेका**

☆ जब कभी मुझे अवगुण देखने की इच्छा होती है तो मैं अपने से आरम्भ करता हूँ और इससे आगे बढ़ नहीं पाता। – **डेविड ग्रेसन**

☆ अगर आत्मसम्मान चाहते हो तो दूसरों का सम्मान करो। – **कठोपनिषद्**

☆ तुम दूसरे की आँख की किरकिरी क्यों देखते हो। अपनी आँख का तिनका तो निकाल। – **बाइबिल**

☆ दूसरों को प्रसन्न रखने की कला स्वयं प्रसन्न होने में है। सौम्य होने का अर्थ है स्वयं से या दूसरों से सन्तुष्ट होना। – **हैजलिट**

☆ जो ईश्वर पर विश्वास रखता है उसी में है आत्म-शक्ति है, नास्तिक में आत्म-शक्ति नहीं होती। – **भगवतीचरण वर्मा**

☆ अतिथि जिसका अन्न खाता है, उसके पाप धुल जाते हैं। – **अथर्ववेद**

☆ कदम पीछे न हटाने वाला ही ऐश्वर्य को जीतता है। – **ऋग्वेद**

☆ क्रोध से सब काम वैसे नहीं बनते, जैसे शान्ति से बनते हैं। – **भगवद्गीता**

☆ धैर्य, क्षमा, करुणा, दया, कोमल वाणी, अद्वेष और शुचिता ये सात सुख के साधन हैं। – **महाभारत**

☆ जिस प्रकार दीवार पर फैंकी गेंद अपने ऊपर आ गिरती है उसी प्रकार दूसरों के लिए चाही हानि अपने ऊपर आ पड़ती है। – **सामवेद**

☆ जो किसी का बोझ हल्का करता है, भगवान उसका बोझ हल्का करते हैं। – **भर्तृहरि**

☆ बुराई के बारे में सोचना, बुराई करने से भी बुरा है। – **मनुस्मृति**

☆ अगर आपके अन्दर उत्साह होगा तो आप असम्भव काम को भी सम्भव बना सकते हैं। – **वाल्मीकि**

☆ हमारी प्रार्थना बस सामान्य रूप से आशीर्वाद के लिये होनी चाहिए क्योंकि भगवान जानते हैं कि हमारे लिए क्या अच्छा है। – **सुकरात**

☆ कष्ट और विपत्ति मनुष्य को शिक्षा देने वाले श्रेष्ठ गुण हैं। जो साहस के साथ उनका सामना करते हैं, वे विजयी होते हैं। –**लोकमान्य तिलक**

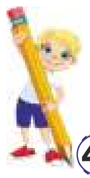

दो बाल कविताएं : कमलसिंह चौहान

सूरज और धरती

चंदा तारों ने ली अंगड़ाई,
रात गई दिन आया भाई।
सूरज हँसते-हँसते आये,
चारों दिशा में किरणें छाई।।

सुबह का सूरज मन को भाता,
ऊपर चढ़कर फिर इतराता।
गरम हुआ हर कोना-कोना,
चिड़िया दाना चुगकर आई।।

लोमड़ी, भालू, शेर, चीता,
गट-गट करके पानी पीता।
पोखर सूखे तालाब रूठे,
नदियों की धारा शरमाई।।

तरबूज पके और खरबूज झूमे,
मधुमक्खी के छत्ते लूमें।
खुशबू छा गई घर-घर में,
धरती माता भी मुसकाई।।

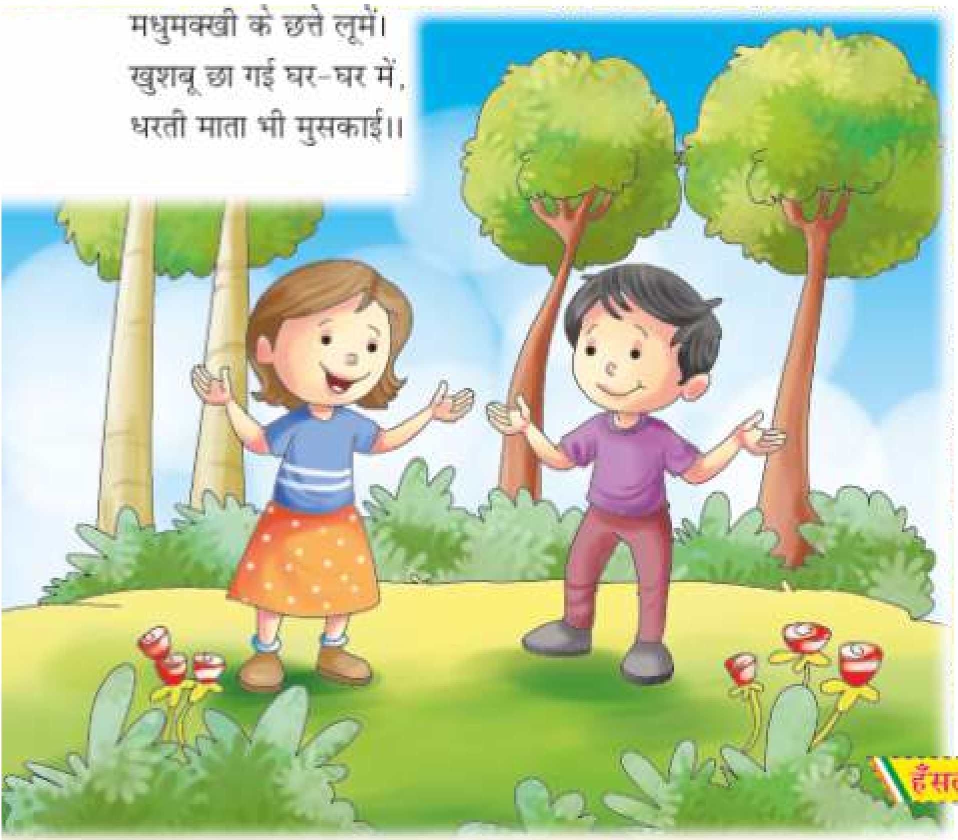

प्यारी धरती

अन्न उगाती प्यारी धरती,
सबके मन को भाती धरती।
वर्षा गर्मी शीत ऋतु संग,
सुख दु:ख साथ निभाती धरती।।

पेड़ उगाती फूल खिलाती,
जीव जन्तु को सुख पहुँचाती।
कन्द मूल फल और चिरौंजी,
सबको देती जाती धरती।।

हीरा सोना तांबा कोयला,
गाँव शहर और मांजरा टोला।
तोता मैना और कबूतर,
सबसे प्रेम निभाती धरती।।

तितली के संग धूम मचाती,
कोयल के संग गाना गाती।
चीता भालू हाथी दादा,
सबकी है दुलारी धरती।।

अप्रैल अंक रंग भरो के श्रेष्ठ चित्र

1. सेफाली 13 वर्ष
ग्राम : सुरैला, पोस्ट : परसरामपुर,
जिला : बस्ती (उ.प्र.)

2. सुहावनी 12 वर्ष
फ्लैट नं. 802,
डीडीए. एच.आई.जी फ्लैट्स,
मोतियाखान, पहाड़गंज, नई दिल्ली

3. सिमरन चोपड़ा 13 वर्ष
606-बी, आदर्श नगर,
फगवाड़ा (पंजाब)

4. सुभांशु शॉ 13 वर्ष
39/8, डॉ. श्यामाप्रसाद मुखर्जी रोड,
टीटागढ़ (प. बंगाल)

5. सुमति वर्मा 11 वर्ष
210, टाइप-2, केन्द्रांचल कालोनी,
गुलमोहर विहार, नौबस्ता,
कानपुर (उ.प्र.)

इनके अतिरिक्त जिनकी प्रविष्टियों को पसंद किया गया वे हैं–

निहारिका, लवलीन (मोहाली), सुदीक्षा (कवैया), प्रतिभा (कृष्णा कॉलोनी, गुरुग्राम), अद्वितीय, पलक (सुन्दरनगर, अजमेर), मनित, अनिल (तारापुर, पालघर), नम्रता (भाईयाणा बस्ती, बुढलाडा), सबीरकुमार (पंजाला), गुरनाम कौर (निरंकारी कालोनी, दिल्ली), आयान (बल्लूवाड़ा, रेवाड़ी), अमृता (सरायरैचन्द), चिंकी (पानीपत), गुरपाल (बराड़ा), स्नेहा, अवनी (ठाकुरपुरा), महक (मालवीय नगर, दिल्ली), हिमांशु (शिवाजी नगर, गुरुग्राम), काव्या (अर्जुननगर, गुरुग्राम), खुशी (नकोदर), रश्मिता (झालवा, इलाहाबाद), स्वर्णजीत (फगवाड़ा), सुदीक्षा (सेमरी बाजार), महक (झाकड़ी), उपमा (साम्बा, जम्मू), भाविका, दक्ष, विशाखा, ओम सोमजनी, कृष्णा, प्रियंका, साहिल सोमजनी, अभय, परी (गोधरा), गीता, रोशनी, संजना, निशा, अभय, लवलेश, सुहानी, मुक्ति, अग्रिमा, काव्या, यशस्वी (महोबा)।

जून अंक रंग भरो

सामने के पृष्ठ पर एक चित्र दिया गया है। इस चित्र में सुन्दर-सुन्दर रंग भरकर **20 जून** तक कार्यालय 'हँसती दुनिया', निरंकारी कॉम्प्लेक्स, निरंकारी सरोवर के पास, निरंकारी कालोनी, दिल्ली-110009 को भेज दें। पांच श्रेष्ठ चित्रों के प्रतिभागियों के नाम (पते सहित) **अगस्त अंक** में प्रकाशित किये जाएंगे।
चित्र के नीचे दिये गये रिक्त स्थान पर अपना नाम और पता अवश्य भरें।
15 वर्ष की आयु तक के बच्चे ही रंग भरकर भेज सकते हैं।

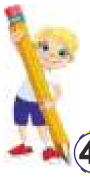

रंग भरो

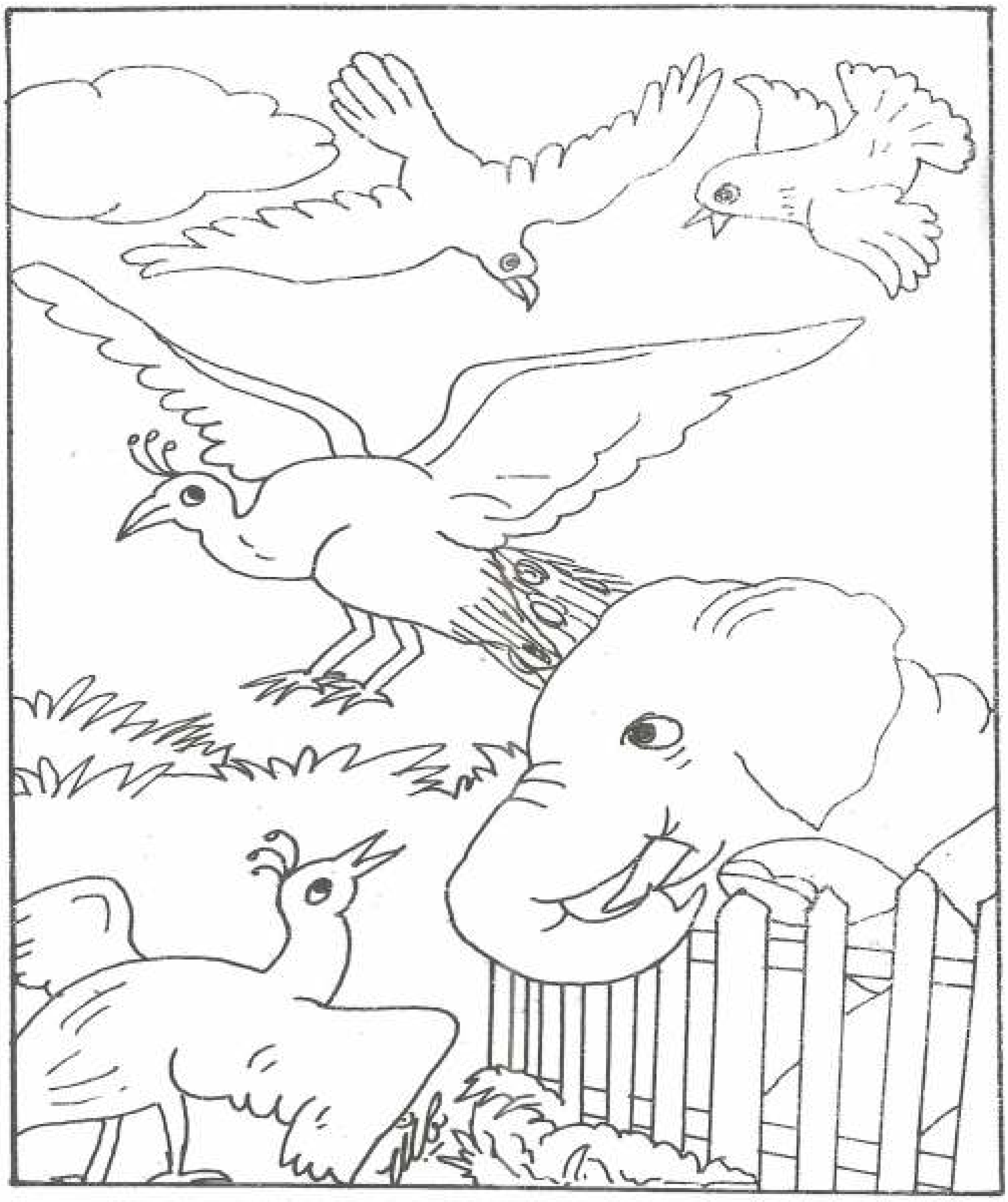

नाम .... आयु ....

पुत्र/पुत्री ....

पूरा पता ....

....

....पिन कोड ....

आपके पत्र

हँसती दुनिया के फरवरी अंक को लाजवाब ज्ञान का अनूठा अंक कहें तो अतिश्योक्ति न होगी। कहानी 'टांग का दर्द' (डॉ. बानो सरताज) ने पत्र-व्यवहार के लिए मजबूर कर दिया।

प्रेरक-प्रसंग 'एक लोटा पानी' से सीख मिलती है कि अपने व्यवहार में परिवर्तन करके हर समस्या का निदान सम्भव है। अन्य लेख भी रोचकता एवं ज्ञान से भरपूर लगे।

मेरी दृष्टि में हँसती दुनिया ज्ञान का खजाना है। पत्रिका अपने-आप में सम्पूर्ण है।

– विरेश कश्यप (रुद्रपुर)

मार्च अंक समय से पहले प्राप्त हुआ। हँसती दुनिया हमेशा समय से पहले चलती है। यह बहुत बड़ी सीख है कि हमें हर काम समय अनुसार कर लेना चाहिये। मुख-पृष्ठ पर ही होली की खुशी नजर आ रही है। अन्दर भी काफी सामग्री त्यौहार के अनुसार ही है।

'विज्ञान प्रश्नोत्तरी' में बड़े ही सरल ढंग से वैज्ञानिक जानकारी दी जाती है। 'किट्टी' अब बड़ी सयानी हो गई है। छोटी कहानी में बड़ी सीख दे जाती है।

अमिता मोहन (भटिंडा)

मैं हँसती दुनिया का नियमित पाठक हूँ। मुझे हँसती दुनिया बहुत अच्छी लगती है। मैं हँसती दुनिया के आने का बेसब्री से इन्तजार करता हूँ। इसमें हमें कहानियां तथा महापुरुषों से जुड़े प्रेरक-प्रसंग बहुत अच्छे लगते हैं। वर्ग पहेली भी ज्ञान में वृद्धि करती है।

मेरी प्रभु से यही प्रार्थना है कि यह पत्रिका दिन-दुगूनी रात चौगुनी तरक्की करे।

– गुरचरण आनन्द (लुधियाना)

पर्यावरण तो धरती का परिधान है

पर्यावरण तो इस धरती का परिधान है,
वृक्ष, वायु, जल, पशु पक्षी सब ईश्वर का वरदान हैं।
इन्हें बनाया हम सबकी सेवा के खातिर,
लेकिन इनका शोषण करते
हम केवल अपने ही खातिर।
जरूरत पूरी हो सकती है,
लालच का नहीं विधान है।
पर्यावरण तो धरती का परिधान है।।
धूल धुआं बढ़ता जाता है,
जंगल कटते जाते हैं।
पशु पक्षी और जल पीने का,
दिन दिन घटते जाते हैं।
वृक्ष और पशु पक्षी जल थल,
सब मानव के मीत हैं।
स्वच्छ वायु और स्वच्छ नीर,
ये जीवन के संगीत हैं।
हम इन मित्रों का शोषण करते,
घोर यही अज्ञान है।
पर्यावरण तो धरती का परिधान है।।

प्रस्तुति : रूपनारायण काबरा (जयपुर)

मैं और मेरा परिवार हँसती दुनिया का बेसब्री से इन्तजार करते हैं। हमें इसमें सभी बातें अच्छी लगती हैं मगर कुछ बातें ऐसी हैं कि बहुत ज्यादा अच्छी लगती हैं और मैं उन बातों को अपने जीवन में अपनाने की कोशिश करती हूँ। हँसती दुनिया पढ़कर मुझे बहुत अच्छा लगता है।

– प्रतीक्षा कुशवाहा (इटावा)

kids
Nirankari
spiritual dreamland for kids
Spiritual Zone for kids
With the blessings of His Holiness
Experience online spiritual learning
with exciting and fun features
highlights our mission's message.
Visit regularly to watch tiny tots
excelling in the spiritual journey.
kids.nirankari.org
His Holiness Message
Glimpse of Blessing
Message in colors
Poetry Fantasy
Wacky and True
Fun Games
Hansti Duniya
Kids Creation
Kids Activities
Jokes
Avtar Vani
Story Time
Share
your talent
in form of
painting, poetry
& story

Registered with the Registrar of Newspaper For India Under RNI No. 25672/73 : Delhi Postal Regd. No. G-3/DL(N)/136/2018-20
: Licence No. U (DN)-23/2018-20
: Licenced to post without Pre-payment

निरंकारी पत्र-पत्रिकाएं पढ़ें और पढ़ाएं!

हँसती दुनिया	सन्त निरंकारी	एक नज़र
(चार भाषाओं में)	(ग्यारह भाषाओं में)	(तीन भाषाओं में)

'सन्त निरंकारी', 'हँसती दुनिया' (हिन्दी, पंजाबी व अंग्रेजी) एवं 'एक नज़र' (हिन्दी/पंजाबी) की सदस्यता के लिए सम्पर्क करें

पत्रिका विभाग, निरंकारी कॉम्प्लेक्स, निरंकारी सरोवर के पास, निरंकारी कालोनी, दिल्ली-110009

Ph. 011–47660200, E-mail : patrika@nirankari.org

सन्त निरंकारी, हँसती दुनिया, एक नज़र (मराठी) व सन्त निरंकारी (नेपाली) की सदस्यता के लिए सम्पर्क करें

Sant Nirankari Satsang Bhawan
1st Floor, 50, Morbag Road, Naigaon, Dadar (E) MUMBAI - 400 014 (Mah.)
e-mail : chandunirankari@yahoo.com & marathi@nirankari.org

अन्य भाषाओं की पत्रिकाओं की सदस्यता के लिए निम्नानुसार सम्पर्क करें

TAMIL
Sant Nirankari Satsang Bhawan,
#7, Govindan Street,
Ayavoo Naidu Colony, Aminji Karai,
CHENNAI-600 029 (T.N.)
Ph. 044-23740830

ORIYA
Sant Nirankari Satsang Bhawan,
Kazidiha, Post : Madhupatna,
CUTTACK-753 010 (Orissa)
Ph. 0671-2341250

TELUGU
Sant Nirankari Satsang Bhawan,
No. 6-2-970, Khairtabad,
HYDERABAD- Pin : 500 029 (TS)
Ph. 040-23317679

GUJRATI
Sant Nirankari Satsang Bhawan,
1st Floor, 50, Morbag Road,
Naigaon, Dadar (E)
MUMBAI - 400 014 (Mah.)
Ph. 22-24102047

KANNADA
Sant Nirankari Satsang Bhawan,
88, Rattanvillas Road,
Southend Circle, Basavangudi,
BENGALURU-560 023 (Karnataka)
Ph. 080-26577212

BANGLA
Sant Nirankari Satsang Bhawan,
884,G.T. Road, Laxmipur-2
East Bardhman—713101
Ph. 0342-2657219

पत्र-पत्रिकाओं के प्रसार अभियान में योगदान देकर सद्गुरु माता जी के आशीर्वाद के पात्र बनें

Posted at NDPSO, Prescribed dates 21th & 22nd., Date of Publication: 16th & 17th (Advance Month)